हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

नवम्बर, 2016 वर्ष 15 अंक 09

सम्पादक

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सहायक

मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,

लखनऊ – 226007

फोन : 0522–2740406

फैक्स : 0522–2741221

E-mail : nadwa@sancharnet.in

nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विदेशों में (वार्षिक) 30 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग

लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़नहुम की मह़ब्बत

मोमिन हर एक, रब से रखता है मह़ब्बत
प्यारे नबी की दिल से रखता है मह़ब्बत
प्यारे नबी की पैरवी करता है हमेशा
अस्ह़ाबे नबी से भी रखता है मह़ब्बत
है जिसको मह़ब्बत यहां अस्ह़ाबे नबी से
साबित है नबी से वह रखता है मह़ब्बत
जिस शख़्स को अस्ह़ाब से है बुग़्ज़ो अ़दावत
साबित है नबी से भी रखता है अ़दावत
लाखों सलामो रहमतें या रब हों नबी पर
बन्दा भी नबी से यह रखता है मह़ब्बत

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
गरीब मुसलमान और विकास	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	07
दीने इस्लाम का मिज़ाज	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	10
सूचना प्रसारण के साधन	ह0मौ0 सैय्यद राबे हसनी नदवी	13
हज़रत मौ0 मुफ़्ती ज़हूर	सम्पाक	15
क़ुर्आन मजीद के क़िस्सों	मौलाना सय्यद वाज़ेह रशीद नदवी	16
हमें अपने दाखिली बिगाड़	मौलाना शम्सुल हक़ नदवी	19
तुर्की का वीर पुरुष	मौलाना इनायतुल्लाह नदवी	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	27
दीनी वातावरण की उपलब्धता	मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी	29
न्याय	मौलाना नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	34
कुछ हास्यप्रद लघु कथाएं	इदारा	36
अचार–हल्वा	इदारा	38
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुरआन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

सूर-ए-आले इमरानः

अनुवाद- और अपने रब की माफी की ओर और ऐसी जन्नत की ओर लपको जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है जो परहेज़गारों के लिए तैयार की गई है(133) जो खुशी और तंगी में ख़र्च करते रहते हैं और गुस्से को पी जाने वाले और लोगों को माफ करने वाले हैं और अल्लाह बेहतर काम करने वालों को पसंद करता है(134) और वे लोग जो कभी खुली बुराई कर जाते हैं या अपनी जानों के साथ अन्याय कर जाते हैं तो तुरन्त अल्लाह को याद करते हैं, बस अपने पापों की माफी चाहते हैं और अल्लाह के अलावा है भी कौन जो गुनाहों को माफ करे और अपने किये पर जानते बूझते वे अड़े नहीं रहते(135) यह वे लोग हैं जिनका बदला उनके रब की ओर से माफ़ी है और ऐसी जन्नतें हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं हमेशा के लिए उसी में रहेंगे और अमल (कर्म) करने वालों का बदला क्या खूब है(136) तुम से पहले भी घटनाएं हो चुकी हैं तो ज़मीन में फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ(137) यह लोगों के लिए खुली बात है और परहेज़गारों के लिए हिदायत व नसीहत है(138) और कमज़ोर मत पड़ो और न दुखी हो अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम ही छा कर रहोगे(139) अगर तुम्हें कोई चोट लगी है तो उसी प्रकार वे लोग भी तो चोट खा चुके हैं और यह (आते—जाते) दिन हम लोगों में अदल बदल करते रहते हैं और इसलिए ताकि अल्लाह ईमान वालों को पहचान कर दे और तुम में गवाह भी बनाए और अल्लाह अत्याचारियों को पसंद नहीं करता[1](140) और इसलिए ताकि अल्लाह ईमान वालों को निखार दे और काफ़िरों को मिटा दे[2](141) क्या तुम्हारा विचार यह है कि यूं ही तुम जन्नत में प्रवेश कर जाओगे जबकि अभी अल्लाह ने तुम में जिहाद करने वालों को परखा भी नहीं और न अडिग रहने वालों को जाना[3](142) मौत का सामना करने से पहले तो तुम उसकी तमन्ना किया करते थे तो अब तुमने उसको आँखों के सामने देख लिया[4](143) और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो अल्लाह के रसूल हैं उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं अगर उनका निधन हो जाए या उनको शहीद कर दिया जाए तो क्या तुम उलटे पांव फिर जाओगे और जो भी उलटे पांव फिरेगा वह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा और जल्द ही अल्लाह शुक्र करने वालों को अच्छा बदला प्रदान करेगा[5](144) किसी जान के लिए सम्भव नहीं कि वह अल्लाह के आदेश के बिना मर जाए उसके लिए एक निर्धारित समय लिखा हुआ

है, जो दुन्या का बदला चाहेगा हम उसको उसमें से दे देंगे और जो आख़िरत के बदले का इच्छुक होगा उसको हम उसमें से देंगे और हम जल्द ही एहसान मानने वालों को बदला देंगे[6](145) कितने ऐसे पैगम्बर हुए हैं कि उनके साथ मिल कर अल्लाह वालों ने जंग की, तो उनको अल्लाह के रास्ते में जो भी तकलीफ़ पहुंची उससे उन्होंने हिम्मत न हारी और न वे कमज़ोर पड़े और न वे दबे और अल्लाह जमने वालों को पसंद करता है[7](146) और वे कुछ न बोले बस यही कहते रहे कि ऐ हमारे पालनहार! हमारे पापों को माफ़ कर दे और हम से हमारे काम में जो ज़ियादती हुई (उसको माफ़ कर) और हमारे कदमों को जमा दे और काफ़िर क़ौम पर हमारी सहायता कर[8](147)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. शुरु की आयतों में वास्तविक उद्देश्य का उल्लेख था और उन गुणों का बयान था जो अल्लाह की प्रसन्नता के साधन हैं और बाद की आयतों में तसल्ली दी जा रही है उहद के युद्ध के अवसर पर अगर तुम ने नुक़सान उठाया तो पहले बद्र युद्ध के अवसर पर दुश्मन भी तो नुक़सान उठा चुके हैं और फिर तुम ज़मीन में चल फिर कर देखो अल्लाह का नियम यही रहा है कि शुरु में पैग़म्बरों के मानने वालों ने तकलीफ़ें उठाई हैं लेकिन अंजाम उन्हीं के हक़ में होता है और यह एक परीक्षा भी है ताकि मुख़लिस (निष्ठावान) लोग दूसरों से अलग हो जाएं और मुनाफिकों की हक़ीक़त खुल कर सामने आ जाए, बस यह ज़माने का उतार-चढ़ाव है जिनसे निराश होने और दिल तोड़ने की आवश्यकता नहीं, अंततः फ़ैसला मुख़्लिसों (निष्ठावानों) ही के हक़ में होता है अगर वे सब्र व तकवे पर क़ायम रहते हैं, अल्लाह के यहां इज़्ज़त व सर बुलन्दी ऐसे ही ईमान वालों का मुकद्दर है।

2. ईमान वाले इस परीक्षा में खरे उतरे और अल्लाह से लौ लगाए रहे और काफिरों की उदण्डता (सरकशी) में और बढ़ोत्तरी हुई जो अंततः उनके मिट जाने का कारण बनी।

3. यानी जन्नत के जो ऊँचे स्थान तुम्हारे लिए तय हैं क्या तुम उनमें बिना परीक्षा के पहुंच जाओगे अल्लाह हर चीज को जानता है, यहां जानने का मतलब यह है कि इस दुन्यां में अल्लाह का ज्ञान प्रकट हो जाए, अल्लाह जानता था कि कौन जमने वाले लोग हैं लेकिन जब उन्होंने परीक्षा की घड़ी में जम कर दिखाया तो दुन्या में यह ज़ाहिर हो गया।

4. जो लोग बद्र युद्ध में शामिल न हो सके थे उनकी तमन्ना थी कि उनको भी अल्लाह के रास्ते में जेहाद व शहादत का अवसर मिले और उन्हीं के ज़ोर देने पर आप सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम मदीने से निकले थे विशेष रूप से उन्हीं से कहा जा रहा है।

शेष पृष्ठ ......06...पर..

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

गीबत क्या है?

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम जानते हो गीबत क्या चीज़ है? मैं ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादा जानते हैं। आप ने फरमाया तुम अपने भाई को ऐसी बात कहो जो उसे ना पसंद हो, किसी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर मैंने वही बात कही जो मेरे भाई में मौजूद है, आप ने फरमाया यही तो गीबत है, अगर वह बात नहीं है जो तुम कहते हो तो यह बोहतान (आरोप) होगा।

(मुस्लिम)

मुसलमानों की जान व माल व इज़्ज़त व आबरूः–

हजरत अबू बक्र रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिज्जतुल वदाअ़ के साल मिना के मकाम पर कुर्बानी के दिन खुत्बे में फरमाया तुम्हारे खून, तुम्हारे माल, तुम्हारी इज़्ज़तें तुम पर इस दिन, इस महीने, इस शहर की तरह हराम हैं (अर्थात प्रतिष्ठित हैं) खबरदार हो जाओ क्या मैंने पहुंचा दिया। (बुखारी–मुस्लिम)

गीबत का असरः–

हजरत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया या रसूलुल्लाह बस सफीया (हज़रत सफीया रज़ि0, रसूलुल्लाह सल्ल0 की बीवी थीं) तो इतनी ही हैं (यानी नाटी हैं) आप ने फरमाया तुम ने ऐसी बात कही कि अगर समन्दर में मिलाई जाए तो उस का भी पानी कड़वा हो जाये, फिर मैंने किसी की हिकायत बयान की, आपने फरमाया मैं किसी की हिकायत न बयान करूं, अगरचे उसके बदले में इतना और इतना मिले (यानी माल)।

(अबू दाऊद–तिर्मिजी)

हज़रत अनस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब मैं मेराज को गया तो ऐसी कौम पर मेरा गुजर हुआ जिस के नाखून तांबे के थे, वह नाखून से मुंह और सीनों को खुरचते थे, मैंने कहा ऐ जिब्रईल अलै0 यह कौन हैं, कहा यह वह लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाया करते थे अर्थात गीबत करते थे और उनकी आबरू रेज़ी करते थे।

(अबूदाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर मुसलमान पर मुसलमान का खून, उस की इज़्ज़त और उसका माल हराम है।

(मुस्लिम)

मुसलमानों की हिमायत :–

हजरत अबू दर्दा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने अपने मुसलमान भाई के इज़्ज़त की हिमायत की (अर्थात कोई आदमी मुसलमान भाई की ऐब जोई करता हो यह सुन कर उसकी बात का जवाब दे और उसका खण्डन कर के उस ऐब से अपने मुसलमान भाई को बरी कर दे) तो अल्लाह तआला कयामत के दिन उस के मुंह से दोज़ख़ की आग दूर रखेगा। (तिर्मिजी)

मुसलमानों की पहचानः-

हजरत इतबान बिन मालिक रज़ि0 से उनकी लंबी हदीस में जो पीछे आ चुकी है रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ने खड़े हुए तो फरमाया मालिक बिन दहशम कहां हैं एक आदमी ने अर्ज किया वह मुनाफिक़ हैं, उनको अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत नहीं आप ने फरमाया ऐसी बात न कहो, तुम नहीं जानते हो कि उन्होंने अल्लाह की खुशनूदी हासिल करने के लिए कल्मा पढ़ा है और उस आदमी पर आग हराम है जो अल्लाह तआला की खुशनूदी हासिल करने के लिए ला इलाहा इल्लल्लाहु कहे। (बुखारी-मुस्लिम)

हज़रत कअ़ब बिन मालिक रज़ि0 से उनकी लंबी हदीस में जो तौबा के बाब में आ चुकी है नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों की भीड़ में तबूक में बैठे हुए थे फरमाया कअ़ब बिन मालिक रज़ि0 का क्या हाल है? बनी सलमा के एक आदमी ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन को अपनी चादर और झुक झुक कर अपने पहलुओं के देखने ने उसकी फुर्सत कहां दी कि वह आते, हज़रत मुआ़ज बिन जबल ने कहा तुम ने बुरी बात कही, खुदा की कसम या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम उन में भलाई के सिवा कुछ नहीं पाते, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खामोश रहे।

(बुखारी-मुस्लिम)

❖❖❖

-प्रस्तुति-

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा ....

5. उहद युद्ध में यह खबर उड़ गई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहीद हो गये इस पर लोगों में तरह-तरह के गुमान पैदा होने लगे और बहुत से लोग हिम्मत हार बैठे, विशेष रूप से उनसे कहा जा रहा है कि आज नहीं तो कल एक दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुन्या से चले जाएंगे तो क्या तुम अपना दीन छोड़ बैठोगे।

5. जब हर एक का समय निर्धारित है तो किसी बड़े या छोटे की मौत सुन कर निराश दिल उचाट हो कर बैठे न रहना चाहिए।

6. यह उन मुसलमानों को लज्जा दिलाई जा रही है जिन्होंने उहुद युद्ध में कुछ कमज़ोरी दिखाई कि जब दूसरी उम्मतों में ऐसे लोग गुज़रे हैं तो तुम लोग तो ख़ैरुलउमम हो।

7. अडिगता (साबित कदमी) के साथ अल्लाह से दुआ भी करते रहिए।

-प्रस्तुति-

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ग़रीब मुसलमान और विकास के प्रयास

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस्लाम नाम है केवल अल्लाह (निर्माता) को पूज्य मानने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अन्तिम रसूल (संदेष्टा) मानने का, वह रसूल भी हैं और नबी भी, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अन्तिम रसूल मानने का अर्थ है कि वह अल्लाह की ओर से जो आदेश मानव जाति के लिए लाये हैं उसका पालन करना, जीवन यापन का वह जो नियम अल्लाह की ओर से लाए हैं उन नियमों को अपनाना, जिस वस्तु को उन्होंने हलाल किया उसको हलाल जानना और जिस को हराम बताया उसको हराम मानना। केवल अल्लाह के पूज्य मानने को तौहीद (एकेश्वरवाद) कहते हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल मानने को रिसालत का विश्वास कहते हैं। एक सच्चा मुसलमान तौहीद व रिसालत के विषय में कोई समझौता नहीं कर सकता, वह जान दे सकता है परन्तु अल्लाह का साझी नहीं ठहरा सकता है। वह जान दे सकता है परन्तु अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन चीज़ों को हलाल (वैध) बताया उसको हराम (वर्जित) नहीं कर सकता और जिन चीज़ों को अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हराम बताया उनको हलाल नहीं कर सकता। अतः इन दोनों बातों में उसको प्रभावित न किया जाये तो उसको विकास के प्रयासों में पीछे नहीं पाया जा सकता।

इस्लाम में (सन्यास) रूहबानीयत नहीं है, उसको सिखाया गया कि वह अपने रब से दुन्या की भलाई भी मांगे और आखिरत की भलाई भी मांगे, यह दुन्या की भलाई ही विकास है परन्तु आखिरत (अगले जीवन) की भलाई को छोड़ कर केवल दुनया की भलाई मांगने पर आखिरत में प्रकोप की चेतावनी है।

करो तरक्क़ी जितनी चाहो रब को अपने मत भूलो
जहां हमेशा रहना है उस देश को अपने मत भूलो

विकास की कामना मनुष्य की प्रकृति है, जो गरीब है वह भी विकास चाहता है और जो धनवान है वह भी विकास चाहता है, हमारी सरकार भी चाहती है कि हर कोई विकास करे परन्तु विकास की इस दौड़ में सरकारी विकास के साधनों पर धनवानों तथा बलवानों का अधिकार है, निर्धन बेचारे उन विकास के सरकारी साधनों से वंचित हैं। ऐसे में गरीब मुसलमानों को अपने विकास और अपनी आवश्यकताएं पूरी करने में अल्लाह पर भरोसा करते हुए खुद साधन सोचने चाहिए।

एक गरीब मुसलमान है, छोटा सा कच्चा घर है, छोटा परिवार है, न खेत है न बाग़ है, न ही सरकारी नौकरी है, वह मज़दूरी करता है और जो आय होती है उससे अपना घर चलाता है, अल्लाह का शुक्र अदा करता है, किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता, सरकार उसकी पत्नी को गैस सिलेण्डर और चूल्हा निशुल्क देगी, तो उसको ईंधन न ढूंढना पड़ेगा, उसके बच्चों को सरकार पढ़ाएगी दीन की शिक्षा वह अपने बच्चों को स्वयं देगा या शाम शुब्ह के वक्तों में

किसी मस्जिद के इमाम से दीन पढ़वा लेगा, इस लिए कि दीनी शिक्षा को अपने बच्चों के लिए अनिवार्य जानता है। वह अपना मकान पक्का करने के लिए बैंक से ऋण किस प्रकार पा सकता है? यह उसके लिए बहुत कठिन है। अगर कोई बिचौलिया कुछ खाने के बाद ऋण दिला भी दे तो ऋण की वापसी उसके मज़दूरी से कैसे हो सकेगी। फिर उस पर जो ब्याज देना पड़ेगा, उस का दीन उसे अवैध बताता है ऐसे में वह क्या करे? उसको चाहिए कि वह मज़दूरी मेहनत से अपना गुज़र बसर करता रहे और अल्लाह से दुआ करे कि वह किसी का आश्रित न रहे, ऐसे ग़रीब मुसलमान ही नहीं बहुत से ग़ैर मुस्लिम भी हैं। सरकार को चाहिए कि ऐसे लोगों का मकान तथा शौचालय निःशुल्क बनाए और संभव है यह बात सरकारी योजना में विद्यमान हो, परन्तु योजना चलाने वाले इस योजना को वहीं साकार करेंगे जहां उनको भी लाभ मिले।

अतः ऐसे गरीब मुसलमानों को परामर्श है कि वह अपनी मेहनत व मज़दूरी से अपना गुजर बसर करें और अल्लाह का शुक्र करे अल्लाह उनकी मदद करेगा, धनवान मुसलमानों को चाहिए कि ऐसे मुसलमानों के लिए अपना कुछ धन अवश्य निकालें, यदि गरीब मुसलमान ज़कात का अधिकारी हो तो ज़कात से अन्यथा दूसरे माल से उन की मदद करें और उनको अपने पैरों पर खड़ा करने का प्रयास करें।

विकास की सरकारी योजनाओं से धनवानों और बलवानों ही को पूरी तरह लाभ मिल पाता है बेचारा निर्धन और निर्बल उनसे वंचित रहता है, जिन निर्धनों को उन योजनाओं से कुछ लाभ मिलता है तो उनको किन किन समस्याओं से गुजरना पड़ता है वह किसी को अपनी कठिनाई बताने में भी असमर्थ हैं। मनरेगा से ग़रीब बेरोज़गार लोगों को लाभ पहुंचाया जाता है परन्तु मनरेगा से लाभ उठाने वाले निर्धनों से कौन पूछने वाला है कि तुम को यह पैसे कैसे प्राप्त हुए हैं, फिर उन निर्धनों की कौन सुनने वाला है जो मनरेगा के लाभ से वंचित हैं।

कौशल विकास अच्छी योजना है परन्तु रोज़गार मज़दूरी करके पेट पालने वाला कौशल विकास के प्रशिक्षण के लिए समय कहां से लाए। अलबत्ता एक निर्धन श्रमिक अपने व्यस्क बच्चे को कौशल विकास में कोई प्रशिक्षण दिला सकता है, परन्तु क्या यह उसके लिए सरल है? भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए आन लाइन बुकिंग तथा आवेदन की व्यवस्था की गई है परन्तु आनलाइन आवेदन वही कर सकता है जो इन्टरनेट की सुविधा रखेगा वह निर्धन न होगा, अतः निर्धन की निर्धनता की समस्या ज्यूं की त्यूं रही। फिर भी जो निर्धन बेरोज़गार कौशल विकास के अंतर्गत कोई कला सीख ले तो उस की बेरोज़गारी दूर हो सकती है।

आज कल रेडियो द्वारा जिन कलाओं को सीखने पर खूब उतसाहित किया जाता है, उन कलाओं में खेल को भी प्रस्तुत किया जाता है, निः संदेह खेल जहां मनोरंजन है वहीं एक अच्छा व्यायाम भी है। परन्तु खेल द्वारा कमाई करना किसी धनवान के लिए ही

सम्भव होगा। इसलिए कि खेल में निपुणता प्राप्त किये बिना उस से कमाई नहीं की जा सकती और खेल में निपुणता प्राप्त करना निर्धन के लिए सरल नहीं।

आज कल रेडियो द्वारा विकास के लिए सांस्कृतिक कलाएं, नृत्य कला, गायन कला, तथा वादन कला सीखने पर भी खूब प्रोत्साहित किया जाता है यह तीनों कलाएं एक मुसलमान न सीखेगा न अपनाए गा, इसलिए इस्लाम धर्म में यह वर्जित हैं, निः सन्देह यह कलाएं मनोरंजन का साधन हैं जो धनवानों ही में स्वीकृत प्राप्त हैं, इन कलाओं से मनोरंजन के अतिरिक्त समाज तथा देश का क्या भला होता है, निर्धन का मनोरंजन तो उसके हंसते बोलते बच्चे और उसकी पत्नी की मीठी बोली है, उनको नृत्य, गायन तथा वादन से क्या लाभ? फिर एक गैर मुस्लिम यदि यह कलाएं सीख भी ले तो क्या उसकी कमाई का साधन बन सकती हैं, यह ज्ञात रहे कि नृत्य कला हो या गायन कला, जब तक इस में निपुणता न प्राप्त हो यह कमाई का साधन नहीं बन सकतीं और इनमें निपुणता प्राप्त करने के लिए अच्छा समय तथा मेहनत चाहिए जो किसी निर्धन के पास कहां?

सरकार ने किसानों के सहयोग के लिए उसकी फस्ल के बीमा की योजना चला रखी है इस योजना से मुसलमान लाभ उठा सकते हैं या नहीं दीनी आलिमों तथा मुफ्तियों को फस्ल के बीमा का शरई हुक्म सार्वजनिक करना चाहिए ताकि मुसलमान किसान उसी के अनुकूल काम करे, परन्तु फ़स्ल बीमा में व्यवहारिक रूप से जो कुछ होता है वह कहने का साहस नहीं कि उसे सिद्ध करना सरल नहीं। फस्ल का मूल्य कोई सरकारी कर्मचारी आंकता है फिर फस्ल का नुक्सान भी कोई सरकारी कर्मचारी आंकता है, यह आंकने की प्रक्रिया जिस प्रकार होती है उसे किसान जानता है या आंकने वाला, तात्यपर्य यह है कि सरकार ने विकास तथा ग़रीबी के उन्मूलन की जितनी योजनाएं बनाई हैं यदि उनको शुद्धता से चलाया जाए तो विकास भी हो और ग़रीबी भी दूर हो, परन्तु भ्रष्टाचारी योजना चलाने वालों से योजना चालाने वालों तथा धनवानों ही को लाभ होता है, ग़रीब इनके लाभ से वंचित रहता है विशेष कर गरीब मुसलमान तो अवश्य ही वंचित रहता है।

जब तक योजना चलाने वालों में गरीबों के प्रति सहानुभूति न होगी, उनमें सत्यता न होगी उनमें कानून से अधिक ईश्वर को उत्तर देने का विश्वास जाग्रत न होगा इन योजनाओं से ग़रीबों का भला होने वाला नहीं।

अन्त में फिर अपने निर्धन मुसलमान भाईयों को परामर्श है कि वह अपने दीन को मज़बूती से पकड़े रहें निष्ठा पूर्वक मेहनत मज़दूरी से अपनी रोज़ी चलाएं, सीख सकें तो कोई हुनर सीखें सम्भव हो तो कोई कारोबार अपनाएं, बुराईयों से बचें समाज में भलाईयां फैलाएं और अल्लाह तआला से तमाम समस्याओं और देश वासियों की कठिनाईयों के समाधान की दुआ मांगते रहें, अल्लाह तआला सब की मदद करे।

❖❖❖

दीने इस्लाम का मिज़ाज और उसकी नुमायां खुसूसियात

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 —अनु0 मु0 हसन अंसारी

अहले सुन्नत वलजमाअ़त के अक़ायद, सही अक़ायद का हकीक़ी सरचश्माः–

नबियों के ज़रिये जो उलूम इन्सानों तक पहुंचे हैं उनमें सबसे आला, अहम और ज़रूरी इल्म खुदा की ज़ात व सिफ़ात का इल्म है। इस इल्म के मरकज़ सिर्फ़ अंबियाकिराम हैं क्योंकि इस इल्म के वसायल और इसकी इब्तेदायी मालूमात आम इन्सान की पहुंच से बाहर हैं। यहां क़यास की कोई गुंजाईश नहीं। खुदा का कोई शबीह व नज़ीर नहीं और वह हर तरह के इन्सानी ख़्याल व मुशाहदा और एहसास से परे हैं। यहां अक़्ल व ज़ेहानत भी कुछ मदद नहीं कर सकती क्योंकि यह वह मैदान नहीं जहां अक़्ल के घोड़े दोड़ाये जायें।

यह इल्म इसलिए सबसे अफ़ज़ल ठहराया गया कि इसी पर इन्सानों की सआदत और फ़लाह मौक़ूफ़ है और यही अक़ायद व अख़लाक़ की बुन्याद है। इसके ज़रिये इन्सान अपनी हक़ीक़त से वाक़िफ़ होता, कायनात की पहेली बुझाता और ज़िन्दगी का राज़ मालूम करता है। इसी लिए हर क़ौम व नस्ल और हर दौर में इस इल्म को सबसे बुलन्द दर्जा दिया गया है। और हर संजीदा इन्सान ने इस इल्म से गहरी दिलचस्पी रखी है। इस इल्म से नावाक़फियत ऐसी महरूमी का सबब है जिसके बाद कोई महरूमी नहीं।

इस सिलसिले में पुराने ज़माने में आम तौर पर दो तब्क़े रहे हैं:–

एक तब्क़ा (समुदाय) वह है जिसने इस इल्म को पाने के लिए खुदा के नबियों पर भरोसा किया और उनका दामन थामा। नबियों पर अल्लाह ने अपनी सही मारफ़त अता की और अपनी ज़ात व सिफ़ात व वाक़फ़ियत के लिए उन्हें अपने और अपनी मख़लूक़ के दरमियान रास्ता बनाया और उन्हें यक़ीन व "नूर" की वह दौलत अ़ता की जिस से ज़ियादा ख़्याल भी नहीं किया जा सकता:–

तर्जुमाः *"और इस तरह हम इब्राहीम को आसमान और ज़मीन की बादशाहत के जलवे दिखाते थे ताकि वह ख़ूब यक़ीन करने वालों में हो जायें।"*

(सूरः अनआम–75)

हज़रत इब्राहीम अलै0 अपनी क़ौम को जब वह उन से ख़ुदा की ज़ात व सिफ़ात के बारे में टेढ़े–मेढ़े सवाल कर रही थी, जवाब देते हैं:–

तर्जुमाः *"क्या तुम मुझसे अल्लाह के बारे में कटहुज्जती करते हो हालांकि उसने मुझे हिदायत दी है।"*

(सूरः अनआम–80)

इस गिरोह के लोगों ने नबियों का दामन थाम कर उनके अ़ता किये हुए अक़ायद

व हक़ायक़ की रौशनी में अपने ग़ौर व फ़िक्र का सफ़र शुरु किया और इसकी मदद से अमल सालेह, तज़किये नफ़्स और तहज़ीब अख़लाक़ का काम सही तौर पर अंजाम दिया। उन्होंने अक़्ल से काम लेना छोड़ा नहीं सिर्फ़ यह किया कि उसको सही रास्ते पर डाल कर उससे वह ख़िदमत ली जो उसके करने का काम और उसका असली फ़ायदा था। इससे उनके ईमान व यक़ीन को ताक़त हासिल हुईः–

तर्जुमाः *"और इससे उनके ईमान व इताअत में इज़ाफ़ा व तरक़्क़ी ही हुई।"*

(सूरः अहज़ाब–22)

दूसरा गिरोह वह है जिसने अपनी ज़ेहानत और इल्म पर पूरा–पूरा भरोसा किया, अक़्ल की लगाम आज़ाद छोड़ दी और क़यास के घोड़े दौड़ये और अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात का तजज़िया (विश्लेषण) इस तरह शुरु किया जिस तरह किसी साईंस की तजरबागाह (प्रयोगशाला) में किया जाता है। और अल्लाह के बारे में "वह ऐसा है" वह ऐसा नहीं है" कि बेधड़क फ़ैसले करने शुरु कर दिये। इनके यहां "वह ऐसा है" कि मुक़ाबले में "वह ऐसा नहीं है" की भरमार है, और यह बात सच है कि जब इन्सान यक़ीन व रौशनी से महरूम (वंचित) हो, तो उसके लिए 'नहीं' 'हां' से अधिक सरल होती है। इसी लिए यूनानी फ़लसफ़–ए–इलाहियात में नतायज, बहस व तहक़ीक़ अक्सर मनफ़ी (नकारात्मक) हैं। कोई दीन, कोई तहज़ीब कोई निज़ामे हयात "नफ़ी" पर क़ायम नहीं होता। यह अंबियाक्राम की शान नहीं। वह "मावराये हिस्स व अक़्ल" हक़ायक़ के बारे "दीदये बीना और गोश शुनूवा" रखते हैं।"

इसीलिए यूनान का इलाहियाती फ़ल्सफ़ा मुतज़ाद ख़्यालात (विपरीत विचारधारा) व नज़रियात का एक जंगल है जिसमें आदमी गुम हो जाये। यह एक ऐसी भूल भुलैया है जिसमें दाख़िल होने के बाद निकलने का रास्ता नहीं मिलता। इस गिरोह में सबसे आगे वह यूनानी फ़िलास्फ़र्स हैं जो पुराने ज़माने से अपनी ज़ेहानत, फ़ल्सफ़े में नये–नये नुक़्ते निकालने तथा इल्म व फ़न के मैदान में अपना एक मक़ाम रखने के लिए मशहूर रहे हैं। मगर चूंकि इल्मे इलाहियात में इनमें से किसी चीज़ का दख़ल नहीं है इसलिए उनकी सारी कोशिशें बेकार गईं। और वह इस अथाह समुद्र में इस तरह गोता लगाते रहे जिसकी तस्जुमानी (व्याख्या) क़ुर्आन की यह आयत करती हैः–

तर्जुमाः *"गहरे समुद्र की अन्धेरी, और समुद्र को लहरों (की चादर) ने ढांक रखा हो। एक लहर के ऊपर दूसरी लहर, और लहरों के ऊपर बादल छाया हुआ, गोया तारीकियां ही तारीकियां हों, एक तारीकी पर दूसरी तारीकी, आदमी अगर खुद अपना हाथ निकाले तो उम्मीद नहीं कि सुझाई दे, और जिस किसी के लिए अल्लाह ही ने उजाला नहीं किया तो फिर उसके लिए रौशनी में क्या हिस्सा हो सकता है"।*

(सूरः नूर–40)

उनके पास न कोई हिदायत थी न रौशनी। न इल्म व इरफ़ान की कोई किरन थी न बुन्यादी मालूमात का कोई सहारा था। जिसके ज़रिये "मजहूल" तक पहुंचना मुमकिन होता है। उनके फ़लसफ़े और शेर व शायरी में शिर्क व बुतपरस्ती रची बसी थी जो उनको नस्ल दर नस्ल विरासत (उत्तराधिकार) में मिलती चली जा रही थी। इसका नतीजा था कि उनका इलाहियाती फ़ल्सफ़ा, ग्रीक माइथालोजी और फ़ल्सफ़ा का एक मिक्सचर बन कर रह गया अगरचे उन्होंने अपने नज़रियात (दृष्टिकोण) के बड़े ऊँचे और शानदार नाम रख रखे थे।

हिन्दुस्तान के अलावा जो अपने ख़ास फ़ल्सफ़ा और देवमाला में मशहूर रहा है, आम तौर पर मुख़्तलिफ़ क़ौमों के फ़िलास्फ़र्स ने उन्हीं की नक़ल की और हिसाब व इल्मे हिन्दसा में उनकी महारत व फ़नकारी का लोहा मान कर उन पर आंख बन्द करके ईमान ले आये। हमेशा से इन्सानों की यह कमज़ोरी रही है कि जब वह किसी एक मैदान में किसी फर्द या जमाअत का लोहा मान लेते हैं तो दूसरे मैदानों में भी उसी की इमामत के क़ायल हो जाते हैं। और इसमें वह किसी बहस या तहक़ीक़ की ज़रूरत महसूस नहीं करता और जो ऐसा करें वह उनके नज़दीक नादान और हठधर्मी है।

जहां तक उन क़ौमों का तअल्लुक़ है जो पुराने ज़माने से अपने दीनी सरमाया को खो बैठीं और हिदायत व नूर से अक्सर महरूम हो गई हैं, उनका यह तर्ज़े अमल कोई तअज्जुब की बात नहीं। तअज्जुब तो उन "मुसलमान दानिशवरों" (बुद्धिजीवियों) पर है जिन को अल्लाह ने नबूवते मोहम्मद और किताबे इलाही की दौलत से नवाज़ा है। वह किताब जिसके बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है:—

तर्जुमाः *"उस ग़ल्ती का दख़ल न आगे से हो सकता है न पीछे से (यह) दाना और ख़ूबियों वाले (ख़ुदा) की उतारी हुई हैं।" (सूरः सज्दा—42)*

पिछली सदियों में इस्लामी दुन्या के बहुत से इल्मी व दरसी हल्क़ों ने इस फ़ल्सफ़ा को ज़्यों का त्यों तसलीम कर लिया और उस पर संजीदा बहसें शुरु कर दीं। और इनमें से बहुतों ने कुर्आनी आयात को इसका ताबे बनाया और इनकी बेमानी तावीलें (अर्थहीन व्याख्याएं) कीं और उनकी इस तरह तफ़सीर की कि वह यूनानी इलाहियाती फ़ल्सफ़ा से मेल खा जायें। ऐसा करने में उनसे अक्सर ग़ल्तियां हुईं क्योंकि वह ख़ुदा को इन्सान और अपने महदूद तजरबात (अनुभवों) पर क़यास कर रहे थे। वह भूल गये कि यह सिफ़ाते इलाही हैं जिन का वजूद इन "लवाज़िम" (जिस्मियत) का मोहताज और पाबन्द नहीं है।

मुसलमानों को एक मुतकल्लिम (बात करने वाला) की ज़रूरत थी जो किताब व

शेष पृष्ठ ......26...पर..

सूचना प्रसारण के साधन पवित्र कुर्आन के प्रकाश में

—हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

—हिन्दी इम्ला: हुसैन अहमद

सूचना प्रसारण की लाभदायकता:-

सूचना प्रसारण की लाभदायकता तथा उपयोगिता यह है कि मनुष्य भली तथा आदर्श बातों से अवगत हो कर और अपना कर, बुरी बातों को छोड़ कर, तथा भली बातें अपने जीवन में ला कर भला मनुष्य बन सकता है परन्तु जब ऐसी सूचनाएं मनुष्य के समक्ष आती हैं जिन से मनुष्य भ्रष्टाचारी हो सकता है तो कुछ मनुष्य अपने तामस मन से बहक कर भ्रष्टाचारी भी हो जाते हैं जैसा कि आज कल की मीडिया का प्रभाव देखने में आ रहा है। सकारात्मक तथा लाभदायक सूचना प्रसारण के उदाहरण हम को पवित्र कुर्आन तथा पवित्र हदीस में मिलते हैं।

उपयोगी सूचना प्रसारण:-

पिछली गुजरी हुई क़ौमों (उम्मतों) में अल्लाह तआला की ओर से भेजे गये नबियों और रसूलों (उन पर अल्लाह का सलाम हो) के जो किस्से पवित्र कुर्आन में आए हैं वह उपयोगी सूचना प्रसारण (मीडिया) के उच्चतर आदर्श उदाहरण हैं विशेष कर हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम का वर्णन जिसमें मनुष्य की बुरी प्रवृत्ति की छाया उनके भाईयों के व्यावहार में दिखती है तथा जीवन की घोर कठिनाइयों में सत्य पर जमे रहने, हर दशा में अल्लाह के सामने शुक्र गुजार (कृतज्ञ) रहने तथा बड़े ही जटिल अवसर पर अल्लाह की मदद से अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने का अनुपम उदाहरण हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की जीवनी में मिलता है उन्होंने कारागार में रहते हुए, अपनी गरिमा को सुरक्षित रखते हुए किस सुन्दरता से बादशाह का विश्वास प्राप्त किया यहां तक की बादशाह के उच्चतर परामर्शकारी बन गए तथा अपनी इस सफलता को अपने पालन हार के सामने इस प्रकार प्रकट किया "जो व्यक्ति अल्लाह से डरते हुए धैर्य के साथ जीवन बिताए अल्लाह उसकी भलाई के प्रतिफल को अकारत नहीं करता" हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की यह घटना पवित्र कुर्आन में, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हृदय को सांत्वना देने तथा शक्ति पहुंचाने के लिए वर्णित की गई है तथा इस में सभी ईमान वालों को सफलता का मार्ग प्राप्त करने की उत्तम शिक्षा है, हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की घटना जो पवित्र कुर्आन में वर्णित हुई है वह व्यक्तिगत जीवन का भी आदर्श है तथा इसका सामूहिक जीवन से भी संबंध है, जब उनको आरोपी बना कर समाज में गिराने का प्रयास किया गया तो उन्होंने अपने पालनहार से प्रार्थना करते हुए परिस्थिति पर धैर्य और संतोष से काम लिया।

सामूहिक क्षेत्र का उदाहरणः-

सामूहिक क्षेत्र का महत्वपूर्ण उदाहरण पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का वर्णन है देश का डिक्टेटर (तानाशाह) अपने देश की बहूसंख्यक जनता का शासक पूरी डिक्टेटरी के साथ अल्पसंख्यक जनता पर अत्याचार के पहाड़ तोड़ रहा था। अल्पसंख्यक जनता इतनी विवश थी कि कुछ कर नहीं सकती थी और आशंकाएं बढ़ती जा रहीं थीं परन्तु उसी उत्पीड़ित अल्पसंख्यक जनता का एक बच्चा अल्लाह ने उस डिक्टेटर के घर पहुंचा दिया डिक्टेटर इस भेद को न पा सका और उसके घर में वह बच्चा परवान चढ़ता रहा, वह बच्चा जब जवान हो गया तो उसके साहस और शक्ति की एक घटना ऐसी घटी की उसके विरुद्ध कार्यवाही किये जाने का अवसर आया परन्तु वह चुपके से दूसरे देश में निकल जाने में सफल हो गया और वह उस अपरिचित वातावरण में अपने भविष्य के बारे में सोचने लगा वह अल्लाह की कृपा तथा दया की प्रतीक्षा करते हुए आगे बढ़ता रहा और परिस्थिति अनुकूल होती चली गई। वहाँ उस की उस क्षेत्र के पैगम्बर हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की बेटी से शादी हो गई वहां 10 वर्ष बिताने के पश्चात अपनी पत्नी के साथ अपने स्वदेश मिस्र लौटे, मार्ग में अल्लाह ने उनको पैगम्बरी प्रदान की और अल्लाह तआला ने आप को तानाशाह फिरऔन के पास भेजा, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने मिस्र पहुंच कर फिरऔन की राज सभा में प्रवेश किया फिर फिरऔन से प्रबल वार्तालाप हुआ इस वार्तालाप में फिरऔन निरुत्तर हो कर झल्ला झल्ला जाता परन्तु हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का कुछ बिगाड़ न सका मूसा अलैहिस्सलाम फिरऔन को समझाते रहे और उस को अपने सुधार की दावत देते रहे और बनी इस्राईल पर अत्याचार से रोकते रहे, एक समय बीत गया परन्तु तानाशाह फिरऔन ने अपना सुधार न किया पैगम्बर मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम ने निरंतर धैर्य तथा संतोष से काम लिया, अन्ततः अल्लाह की तरफ से फिरऔन और उसकी सेना को दण्डित किया गया और फिरऔन अपनी सेना के साथ समुद्र में डुबो दिया गया और अल्पसंख्यक (बनू इस्राईल) को फिरऔनी अत्याचारों से छुटकारा ही न मिला अपितु वह उसके राज के उत्तरदायी बन गये। मूसा अलैहिस्सलाम की इस घटना से उनकी क़ौम बनी इस्राईल को बड़ी सांत्वना मिली और उनकी कठिनाइयां दूर हुई, पवित्र क़ुर्आन की इस सूचना में आज भी उन अल्पसंख्यकों के लिए जिन पर अत्याचार हो रहा हो, सांत्वना है तथा भविष्य में आने वाली क़ौमों के लिए मार्गदर्शन है। कोई भी शक्तिशाली अत्याचारी सदैव अपना अत्याचार बाकी नहीं रख सकता एक दिन फिरऔन की तरह उस का अन्त होगा।

शेष पृष्ठ ......33...पर..

हज़रत मौ० मुफ़्ती मुहम्मद ज़ुहूर नदवी अल्लाह की ख़ास रहमत में

—सम्पादक

22 ज़िल्हिज्ज 1437 हि0 तदानुसार 25 सितम्बर 2016 ई0 इतवार की प्रातः को 6 बजे मेरे पोते हाफिज़ अब्दुल करीम नदवी ने सूचना दी कि मुफ़्ती मुहम्मद ज़ुहूर नदवी साहब इस दुन्या में नहीं रहे, इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, मैंने अब्दुल करीम से कहा मुझे फौरन मुफ़्ती साहब के पास ले चलो और उनकी ज़ियारत कराओ, मैं हज़रत मुफ़्ती साहब के पास पहुंचा लोग उनकी ज़ियारत कर रहे थे मैंने भी इन्नालिल्लाहि पढ़ते हुए और आँसू बहाते हुए उनकी पेशानी पर हाथ रखा और उनके लिए और अपने लिए अल्लाह तआ़ला से मग़फिरत की दुआ मांगी हज़रत मुफ़्ती साहब से मेरा संबंध बहुत पुराना है मुझे याद पड़ता है कि जब मैं देहात में था तो 1956 या 1957 में उनसे डाक द्वारा फतवा लिया था, फतवा देहात के गांव में जुमे की नमाज़ से संबंध रखता था, लिखित फतवा तो खो गया परन्तु भावार्थ याद है, आपने लिखा था कि देहात के गांव की मस्जिदों में जहां जुमे की नमाज़ पढ़ी न जा रही हो वहां जुमा जारी न किया जाये लेकिन जहां गांव की मस्जिद में किसी ने जुमे की नमाज़ जारी कर रखी हो तो वहां जुमे की नमाज़ बन्द न की जाये।

फिर जब ज़रूरत होती मुफ़्ती साहब से डाक द्वारा फतवा मंगवाता, वैसे मैं 1960 ई0 में नदवे मे आ गया था मगर मरकज़ इस्लाह व तबलीग़ के मकतब (बी0एन0 वर्मा रोड) में मुदर्रिस था नदवे आना बहुत कम होता, सन् 1963 में जब मैं नदवे के मदरसा सानवीया में मुदर्रिस हो कर आया तो हज़रत मुफ़्ती साहब से मुलाक़ात का शरफ हासिल हुआ तब से हज़रत मुफ़्ती साहब की वफात तक तअ़ल्लुक रहा। हज़रत मुफ़्ती साहब के हज़ारों हज़ार नदवी उलमा शागिर्द हैं उनमें बड़ी तअ़दाद में उस्ताद हैं और एक अच्छी तअ़दाद अच्छे लेखकों की है।

हज़रत मुफ़्ती साहब मेरे एक भाई दो बेटों और एक पोते के उस्ताद थे, हज़रत मुफ़्ती साहब दारुल उलूम के ऊँचे उस्तादों में थे वह फिक़्ह की ऊँची किताबें पढ़ाते थे वह नदवी आ़लिमों को फतवा देने का प्रशिक्षण भी देते थे वह इधर कई वर्षों से नदवतुल उलमा के नाइब नाज़िम भी थे। मुफ़्ती साहब ने मुझे बताया था कि उन की पैदाइश का सन् 1927 है इस लिहाज से वह अपनी आयु के 90 वर्ष में चल रहे थे हिज्री साल के हिसाब से वह 92 वर्ष में थे सही क्या है अल्लाह जाने।

इधर लगभग 2 वर्षों से बअ़ज़ बीमारियों के कारण चल नहीं पाते थे व्हील चेयर पर आफिस आते थे। मेरे मन में उनका कितना आदर था और वह मुझ पर कितनी कृपा करते थे इसको दूसरा नहीं समझ सकता है वह मुझ को ऐन और अपने को ग़ैन कहते और जब मैं उनका हाल पूछता तो जवाब देते जो हाल ऐन का वही ग़ैन का, अस्ल में हम दोनों क़ब्ज़ के रोग से पीड़ित थे तेज़ दवा खाये बिना न उनको लैट्रिन होती न मुझको।

शेष पृष्ठ ......39...पर..

क़ुर्आन मजीद के क़िस्सों में इबरत (उपदेश) के पहलू

—मौ0 सै0 वाज़ेह रशीद नदवी

—रूपान्तरः गुफ़रान नदवी

इस हक़ीक़त से इनकार नहीं किया जा सकता कि क़िस्सा साहित्य में महत्वपूर्ण क़िस्म है और बाज़ वक़्त वह कविता से अधिक प्रभाव रखता है। कविता का प्रभाव सामायिक होता है लेकिन क़िस्सा पूरी जिन्दगी पर अपना प्रभाव डालता है, इसके साथ साथ यह भी हक़ीक़त है कि क़िस्से का दौर और उसका अमल कविता के दौर और उसके अमल से पहले शुरु हो जाता है, इसकी शुरुआत माँ की गोद से होती है, माएं अपने बच्चों को अपनी पसंद और अपने मिज़ाज के एतिबार से क़िस्सों द्वारा दिल बहलाती हैं और बाज़ वक़त बाज़ क़िस्से बच्चे के ज़हनी निर्माण में अहम रोल अदा करते हैं, बाज़ बड़े इन्सानों के उल्लेख में ऐसे क़िस्सों का उल्लेख मिलता है जो उन्होंने बचपन में सुने या पढ़े और बाज़ क़िस्से मनोविज्ञान और सोच को प्रभावित करते हैं, क़िस्सा किसी रूप में हो और किसी गुण में हो, इनसान का उससे संबंध रहा है, और प्रारंभिक काल से उसकी उसके साथ रुचि रही है। यही वजह है कि इस कला की शुरुआत चित्रकारी मूर्तिकारी और दूसरे ललित कलाओं से पहले हुई।

क़िस्से की महत्वता और लाभ प्रद की वज़ह से ज़हन की रचना के लिए शिक्षकों और समाज सुधारकों ने क़िस्सों का बड़ा सहारा लिया, क़ुर्आन शरीफ़ और हदीस शरीफ़ में क़िस्सों का बहुत बड़ा भण्डार है, क़ुरआन शरीफ़ में और हदीस शरीफ़ में इसकी बड़ी गुणवत्ता का वर्णन है। "तुम यह क़िस्से इनको सुनाते रहो, शायद कि ये कुछ सोच विचार करें (आराफ़—176) क़ुर्आनी क़िस्सों के बयान करने की शैली साधारण क़िस्सों से भिन्न है, इसलिए कि उसका उद्देश्य केवल क़िस्सा बयान करना और तफ़रीह नहीं है और इल्म में इज़ाफ़ा नहीं करना है, क़ुरआन के क़िस्सों में मौलिक उद्देश्य उपदेश है। जैसा कि सूरः यूसुफ के अन्त में क़ुरआनी घटनाओं और क़िस्सों का वास्तविक अर्थ इस प्रकार बयान किया गया है "पहले के लोगों के इन क़िस्सों में बुद्धि और चेतना वालों के लिए शिक्षा प्रद सामग्री है यह जो कुछ क़ुर्आन में बयान किया जा रहा है यह बनावटी बातें नहीं हैं बल्कि जो किताबें इससे पहले आई हुई हैं उन्हीं की पुष्टि है और हर चीज़ का विस्तृत वर्णन और ईमान लाने वालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।

इस्लामिक चिन्तक हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह0 लिखते हैं " क़ुर्आन करीम ने दअ़वत के लिए वाकिआत बयान करने और मिसालें देने का उसलूब (शैली) इख़्तियार किया है, दूसरे वसाएले दअ़वत की बनिस्बत यह तरीक़ा ज़ियादा जूद असर और दिल नशीं

(अति प्रभावित एवं ह्रदय मय) है और उद्देश्य की प्राप्ति में यह पद्धति लाभकारी और उपयोगी सिद्ध हुई है। एक ओर कुरआन करीम ने यदि विस्तारपूर्वक नियम और कानूनी बारीकियां बताने को ज़रूरी नहीं समझा है तो दूसरी ओर इस ख़ला (अंतरिक्ष) को (यदि इस को ख़ला समझा जाए तो वास्तविक ख़ला नहीं है) अंबियाकिराम की सीरत (जीवन चरित्र) और उनके मवाइज़ (उपदेश) और दअ़वत को आदर्श वार्तालाप से पूर्ण किया है। यह आदर्श वार्तालाप दिलों पर अतिशक्तिशाली प्रभाव डालते हैं, ज़ेहन और दिल पर उनका जादू के समान असर पड़ता है वह किसी अन्य साधन द्वारा असर नहीं पड़ सकता है। दअ़वत के काम में तर्कशास्त्र अथवा मानु शास्त्र पद्धति नहीं उपयोगी हो सकती है, समस्त आसमानी पुस्तकों ने शुरु से आख़िर तक व्यवहारिक आदर्शों पर भरोसा किया है। यह आदर्श और उदाहरण साहित्य के अनमोल रतन हैं जो दिलों को मोह लेते हैं।

इन में से अधिकतर घटनाएं चार बड़े बुजुर्ग पैगम्बरों के जीवन चरित्र से ली गई हैं, वह अंबियाकिराम हज़रत इब्राहीम, दूसरे हज़रत यूसुफ़, तीसरे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और आखिर में खातमुल अंबियावर्रुसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।"

प्रसिद्ध लेखक सय्यद कुतुब शहीद रह0 इस विषय में लिखते हैं "कुर्आनी क़िस्से वास्तव में ईमानी क़ाफ़िले के लंबे और निरंतर सुर की दास्तान होती है और कुर्आन में दअ़वते दीन की लंबी कहानी को समो दिया गया है। जो एकेश्वरवाद दूसरे वंश के लोगों के सामने पेश की जाती रही और लोग उसे स्वीकार करते रहे, यह किस्से एक तरफ़ तो इन्सानोंकी बुजुर्ग हस्तियों की ईमानी कैफ़ियत को पेश करते हैं और दूसरी तरफ़ यह बताते हैं कि इन बुज़ुर्ग हस्तियों और रब्बुल आलमीन (सारे जहान का पालनहार) के बीच संबंध की नौइयत (स्थिति) क्या थी, इन क़िस्सों के माध्यम से हम देखते हैं कि इस प्रकार यह ईमानी क़ाफ़िला इस लंबे राज पथ पर चला आता है दिल को रौशनी और तहारत (पवित्रता) से भरते हुए, और दिल के अन्दर ईमान की बहुमूल्य पूंजी और इस संसार में इसकी अहमियत का एहसास पैदा करते हुए आगे बढ़ता चला जाता है, वह ईमानी तसव्वुरे हयात को तमाम दूसरे अस्थाई तसव्वराते ज़िन्दगी से अलग करते हुए उसे इन्सान के हिस व शुऊर (बुद्धि) में बिठाता है, यही वजह है कि कुर्आन जो किताबे दअ़वत है उसका बड़ा हिस्सा ऐसे ही किस्सों पर आधारित है।

(फ़ी ज़िलालिल कुर्आन–1/65)

कुर्आन शरीफ के अधिकतर क़िस्से अंबिया अलैहिस्सलाम के पेश किये गए हैं मगर वह पूरा किस्सा जो उनकी ज़िन्दगी के अधिकांश हिस्से पर आधारित हो, एक जगह नहीं बयान किया गया, बल्कि उनके जीवन काल, विषय के अनुसार विभिन्न

जगहों पर बयान किया गया केवल हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क़िस्सा सूरः यूसुफ में पूरी रूप से आ गया है।

विभिन्न सूरतों में आने वाले किस्सों का उसलूब (शैली) विभिन्न है, जैसे सूरः अनआम में अंबिया का सिर्फ़ तज़किरह (आयतः 75–95) है, सूरः आराफ़ में कुछ तफ़सील सूरः हूद में ज़ियादा तफ़सील बयान की गई है और सूरः कहफ़ में असहाबे कहफ़ का क़िस्सा बयान करके हज़रत मूसा की ज़िन्दगी का एक वाक़िया बयान किया गया जो दूसरे जगह नहीं बयान किया गया, इसके बाद ज़ुलक़रनैन का वाक़िया जो सिर्फ़ एक मर्तबा ज़िक्र किया गया, ताहा, मरयम, क़मर और दूसरी सूरतों में प्रारंभिक भाग यानी नबियों की दअवत और क़ौम की प्रतिक्रिया का बयान किया गया है। जिसका उद्देश्य यह है कि सारे नबियों की दअ़वत एक ख़ुदा की इबादत और अच्छे अख़लाक़ इख़्तियार करने की दअ़वत है और उस क़ौम की निश्चित कमज़ोरियां, गुनाहों से बचने का उपदेश, दूसरी सूरतों में नबियों की दअ़वत के इनकार और उन नबियों के साथ दुशमनी का व्यवहार, और उनसे अज़ाब (प्रकोप) लाने की मांग का ज़िक्र आया है, और कुछ सूरतों में संक्षिप्त के साथ नबियों की दअ़वत, क़ौम का दअ़वत से इनकार और अज़ाब के नाज़िल होने का ज़िक्र एक साथ आया है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़िस्से के विभिन्न टुकड़े विभिन्न जगहों पर बयान किये गए हैं।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा कुरआन करीम में लगभग 39 जगहों पर आया है और वह मुकर्रर (पुनः) नहीं है, बल्कि विभिन्न वाक़िआत विभिन्न जगहों पर आवश्यकतानुसार आए हैं।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश और इब्लीस की प्रतिक्रिया संक्षिप्त में विभिन्न जगहों पर कुर्आन शरीफ़ में आया है, असहाब कहफ़ का वाकिया सिर्फ़ सूरह कहफ़ में बयान किया गया है।

कुर्आन मजीद उन एतिहासिक घटनाओं को केवल इसलिए नहीं बयान करता कि वह घटनाएं हैं जिनका इतिहास में दर्ज होना ज़रूरी है बल्कि उसका उद्देश्य यह है कि वह उन वाक़िआत से पैदा शुदा नताएज (परिणाम) को रुश्द व हिदायत (पथ प्रदर्शन) के लिए मौइज़त व इबरत (उपदेश व शिक्षा) बना ले और मानव बुद्धि और भावनाओं से अपील करे कि वह क़वानीन फ़ितरत (प्रकृत विधि) के सांचे में ढले हुए उन एतिहासिक परिणाम से सबक हासिल करे और ईमान लाए कि अल्लाह तआ़ला की हस्ती एक वास्तविकता है जिसका नकारना संभव नहीं और उसकी यह कुदरत ही पूरे संसार में शक्तिशाली है और इसी मज़हब के आज्ञापालन में सफलता और मोक्ष है और हर प्रकार की उन्नति गुप्त है जिसका नाम मज़हब व फितरत (प्राकृतिक धर्म) या इस्लाम है, कुर्आनी किस्सों की एक विशेषता मनज़रकशी (दृश्य आकर्षण) और इन्सानी मनोविज्ञान

शेष पृष्ठ ......35...पर..

हमें अपने दाख़िली बिगाड़ पर भी ग़ौर करना चाहिए

–मौलाना शम्सुल हक़ नदवी
–हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

इस वक़्त पूरी दुन्या में जुल्मों ज़ियादती का जो बाज़ार गर्म है हम उसका तो बार बार ज़िक्र करते हैं और खुद अपनी मज़लूमियत का भी रोना रोते हैं। लेकिन खुद हमारे अपने मुस्लिम मुआशरा में घर और खानदान में फसाद ने पंजे गाड़ रखे हैं। उसकी तरफ हमारी नज़र भी नहीं जाती हालांकि इस वक़्त मुसलमानों में ज़िल्लतो रुस्वाई की जो शर्मनाक सूरत पायी जाती है वह उनके अपने दाखिली बिगाड़ ही का नतीजा है क्या मुसलमानों को ये तअ़लीम नहीं दी गई है कि मुसलमान, मुसलमान का भाई है? क्या ये नहीं बताया गया कि जिसने छोटों पर रहम न किया और बड़ों का एहतिराम न किया वह हममें यानि (उम्मते मुस्लिमा) में से नहीं है क्या हम को यह नहीं बताया गया कि रहम करने वालों पर रहमान रहम करता है ज़मीन वालों पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा पड़ोसियों के हुकूक ऐसे बताये गये कि सहाबा किराम रज़ि0 को ख्याल हुआ कि कहीं ये विरासत में हिस्सेदार न क़रार दे दिये जायें माँ–बाप के हुकूक का ये आलम है कि अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को यह दुआ तालीम फरमाता है (ऐ अल्लाह तू उनके साथ अपने लुत्फ व करम का ऐसा मामला फरमा जैसा कि उन्होंने बचपन में हम को प्यार से पाला) बड़े भाई के बारे में बताया गया कि बड़ा भाई बाप का दरजा रखता है, खाला के बारे में कहा गया कि वह माँ के बराबर है, फूफा, फूफीं, ख़ुसुर खुश दामन के कैसे हुकूक़ बयान किये गये हैं और सि–लए–रहमी की कितनी सख़्त ताकीद है आखिरी दर्जा की बात यह है कि अल्लाह तआ़ला ने फरमाया कि जो रिश्तों को तोड़ेगा मैं उससे क़तअ़ तअ़ल्लुक कर लूंगा। हद यह है कि अच्छे खासे दीनदार क़–तए–रहमी का शिकार हैं जिसका नतीजा यह है कि घर घर में लड़ाई, बाप बेटे में इख़्तिलाफ़ बल्कि क़त्ल तक के वाक़िआत पेश आ जाते हैं, भाई भाई का हक़ मार रहा है रिश्ते नाते तोड़े जा रहे हैं। हम यूरोप के घरेलु निज़ाम की तबाही, बद अख़्लाक़ी, बे मुरव्वती, बाप बेटे में ताजिरो ग्राहक जैसे तअल्लुक, बहन भाई की महब्बत के फुक़दान का बड़े ज़ोरों से ज़िक्र करते हैं जिनका न कोई दीनो अक़ीदा है न ही अख़्लाक़ियात और न छोटे बड़े के अदब व एहतिराम की कोई तअ़लीम लेकिन हम जो किताबे रब्बानी पढ़ने वाले और तअ़लीमाते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिल से मानने वाले हैं वह किस बेराह रवि का शिकार हैं?

एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझसे एक बड़ा गुनाह हो गया है मेरी तौबा कैसे कु़बूल होगी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा तेरी मां ज़िन्दा है? उसने कहा नहीं! फरमाया खाला? उसने कहा जी हां! फरमाया कि तू अल्लाह से तौबा कर और उनके साथ हुस्न सुलूक कर एक बार सरकारे दो आलम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मजमे में यह इरशाद फरमाया कि जो रिश्तेदारी का पासो लिहाज़ न रखता हो वह हमारे पास न बैठे यह सुन कर एक शख़्स मजमे से उठा और अपनी खाला के घर गया जिससे कुछ बिगाड़ था वहां जा कर उसने अपनी खाला से मअ़ज़रत की और कु़सूर मुआ़फ कराया फिर दरबारे नुबूवत में शरीक हो गया जब वह वापस आया तो सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उस कौ़म पर खुदा की रहमत नहीं नाज़िल होती जिसमें ऐसा शख़्स मौजूद हो जो अपने रिश्तेदारों से बिगाड़ रखता हो अब हम गौ़र करें इस वक़्त हमारे मुस्लिम मुआ़शरे का क्या हाल है?

दो हकीकी भाइयों के घर मिले हुए हैं एक के घर में तक़रीब है दूसरा उसमें शरीक नहीं इतना ही नहीं बल्कि एक दूसरे को नीचा दिखाने की फिक्र में लगे रहते हैं हज़ारों खानदान हैं जिनमें ज़मीनो ज़ायदाद के बरसहा बरस तक झगड़ों और मुक़दमा बाज़ियों का सिलसिला जारी रहता है क़तअ़े तअ़ल्लुक़ तो एक आ़म बात है मामूली सी बातों पर ऐसा क़तअ़े तअ़ल्लुक़ कर लिया जाता है कि एक दूसरे की सूरत देखना गवारा नहीं करते। फिर खुदा की रहमत कैसे नाज़िल होगी? इस वक़्त मुसलमानों में खुली हुई नहूसत, ज़िल्लत व रुस्वाई, बदनामी की जो अफसोस नाक सूरते हाल है क्या इसमें इसके सिवा किसी और चीज़ का दख़ल है? हम गौर करें तो देखें कि अ़ज़ीज़दारी बाक़ी है या नहीं? मां–बाप को अपनी औलाद से और औलाद को अपने मां–बाप से वह तअ़ल्लुक है जो होना चाहिए? अब आ़म सूरते हाल ये है कि गै़रों के साथ अगर भूले से नेकी हो जाए तो मुम्किन है मगर अजी़ज़ों के साथ नेकी करना गुनाहे कबीरा है, गै़रों से हसना बोलना होता है मगर अजी़ज़ों से मिलने ही में तौहीनी महसूस होती है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सि–लए–रहमी की बरकात के बारे में ये फरमाया है कि: 1. सि–लए–रहमी से महब्बत बढ़ती है। 2. माल बढ़ता है। 3. उम्र बढ़ती है। 4. रोज़ी बढ़ती है। 5. आदमी बुरी मौत नहीं मरता। 6. उसकी मुसीबतें और आफतें टलती रहती हैं। 7. मुल्क की आबादी और सरसब्ज़ी बढ़ती है। 8. गुनाह माफ किये जाते हैं। 9. नेकियां कु़बूल की जाती है। 10. जन्नत में जाने का इस्तिहक़ाक़ हासिल होता है।

11. सि–लए–रहमी करने वाले से खुदा अपना रिशता जोड़ता है। 12. जिस क़ौम में सि–लए–रहमी करने वाले होते हैं उस क़ौम पर खुदा की रहमत नाज़िल होती है।

सि–लए–रहमी के अलावा मुसलमानों के और दूसरे जो अन्दरूनी हालात हैं, क्या उनके होते हुए खुदा की रहमत नाज़िल होगी? इज़्ज़त व सुर्ख़रूई की ज़िन्दगी हासिल होगी? एक इदारे वालों का दूसरे इदारे वालों से इख़्तिलाफ़, जमाअ़त का जमाअ़त से इख़्तिलाफ ब्रिदरी का ब्रिदरी से इख़्तिलाफ है उहदा और मनसब की कशमकश, हिल्मो बुरदबारी का फुक़्दान, हिकमत व दूर अन्देशी से काम न लेने का मिज़ाज, अपने फराइज़ व ज़िम्मेदारियों को अदा करने में कोताही और उसकी तावील और दूसरों का मुहासबा और उन पर तन्क़ीद, ये आ़म मिज़ाज बन गया है मसलकी जंगों जिदाल का ये आलम है कि एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए अगर मुखालफीन से मिल कर खुद उनको नीचा दिखा सके तो उसमें ज़रा झिझक नहीं होती।

मुसलमानों को अपने आपसी मेल मिलाप, महब्बत व इकराम के जो दुन्यावी फवाएद बताये गये हैं वह तो हैं ही, आखिरत में इसका जो सिला मिलने वाला है उसका तो ज़िक्र ही क्या? जिसको न आंख ने देखा और न किसी कान ने सुना है, ये सब भूल कर हम को शिकायत उन से है जिनका न कोई दीन है, न मरने के बाद जीने का हिसाब किताब का तसव्वुर, बस जो कुछ है इस फानी दुन्या ही का लुत्फो मज़ा है, जिसको क़ुरआन करीम ने फरमाया (थोड़े दिन मज़े उड़ा लो तुम मुजरिम हो, यानि जिनकी सज़ा जहन्नम के भड़कते हुए शोले हैं)। हम तो ख़ैर उम्मत हैं हमको तो नेकी का हुक्म करने और बुराई से रोकने का हुक्म दिया गया है, (जब हम ही अपनी सूरत बिगाड़ लें तो फिर ख़ैर और अमन व सुकून का माहौल कैसे बन सकता है।

कठिन शब्दों के अर्थः– दाखली=आंतरिक (आपसी), मज़लूमीयत= उत्पीड़न, एह्तिराम= सम्मान, रह्म= दया, हुकूक़=अधिकार, रहमान= बड़ा दयालू (खुदा), वरासत= मृतक सम्पत्ति, सि–लए–रह्मी=संबन्धियों से सद्व्यवहार, क़तए–तअ़ल्लुक= संबंध तोड़ना, क़तए रहिमी=संबंधियों से नाता तोड़ना, फुक़्दान= अभाव, किताबे रब्बानी= पवित्र कुर्आन, हुस्न सुलूक= सद्व्यवहार, तक़रीब=समारोह, इस्तिह्क़ाक़=अधिकार, बुर्दबारी=सहनशीलता।

❖❖❖

सेब, केला और अंगूर

एक सेब जो प्रतिदिन खाये
रोग से मालिक उसे बचाए
जो खाए हर दिन अंगूर
ताक़त वह पाए भरपूर
केले में फौलाद बहुत है
केले में तो खाद्य बहुत है
केला खाओ वज़न बढ़ाओ
दुर्बलता को दूर भगाओ

तुर्की का वीर पुरुष "तय्यिब अर्दगान"

–मौलाना इनायतुल्लाह नदवी

–हिन्दी इम्ला: हुसैन अहमद

एशिया और अफरीका के देशों में आए दिन सैनिक विद्रोह होते रहते हैं, जब तब कोई सरफिरा सैनिक जनरल या करनल बन्दूक की नोक पर किसी शाही पैतृक शासन अथवा लोकतांत्रिक निर्वाचित शासन का तख्ता पलट कर सत्ता पर अधिकार जमा लेता है और तानाशाही के साथ पूरी जनता पर अपनी मर्जी चलाने लगता है, जैसा कि अभी कुछ दिनों पहले मिस्र में हुआ जहां इख़वानुल मुस्लिमीन के जनता द्वारा निर्वाचित अध्यक्ष (सद्र) का तख्ता पलट कर एक अत्याचारी सैनिक जनरल अब्दुल फत्ताह सीसी ने सत्ता पर अधिकार जमा लिया और देश के संवैधानिक शासक और उनके हजारों समर्थकों को जेल की सलाखों के पीछे ढकेल दिया, विरोध करने वाली सहस्त्रों मिस्री जनता को सैनिकों ने गोलियों से भून दिया, सीसी को सत्ता पर पहुंचाने में अमरीकी गुप्त एजेंसियों और यूरोपियन गुप्त एजेंसियों का भर पूर हाथ रहा , और यह वास्तविकता है कि किसी देश का सैनिक जनरल या करनल अपने अध्यक्ष के विरुद्ध देश सैनिक विद्रोह उसी समय करता है जब उसे किसी दूसरे शक्तिशाली देश की ओर से संकेत और सहारा मिलता है।

तुर्की में भी पहले कई बार सफल सैनिक विद्रोह हो चुके हैं, सबसे पहले जनरल मुस्तफा कमाल पाशा ने 3 मार्च 1924 ई0 को 625 वर्ष पूर्व स्थापित उस्मानिया खिलाफत के विरोध में विद्रोह किया और खलीफा अब्दुल मजीद को पदच्युत करके सत्ता अपने हाथ में ले ली और देश में प्रचलित शरई व्यवस्था समाप्त करके कम्युनिस्ट तथा सोशलिस्ट व्यवस्था बल पूर्वक चालित कर दी खानकाहों और मदरसों पर ताले लगवा दिए, नकाब और दाढ़ी पर प्रतिबन्ध लगा कर उनको विधान विरोधी घोषित कर दिया, अजान और इकामत को अरबी के स्थान पर तुर्की में कहने का आदेश दे दिया, तुर्की भाषा जो अरबी लिपि में लिखी जाती थी उसको लातीनी (अंग्रेजी अक्षरों) में बदलवा दिया, मदिरा पान को सरकारी संरक्षण दिया, इस प्रकार मुस्तफा कमाल ने तुर्की जनता को जिस में 600 वर्षों तक इस्लाम की सेवा की थी उसको उस सेवा से वंचित करने का भरपूर प्रयास किया, 1938 ई0 में कमाल पाशा मर गया परन्तु उसकी स्थापित की हुई ताना शाही तथा अत्याचारी शासन व्यवस्था 1946 ई0 तक चलती रही, 1946 ई0 में तुर्की में स्वतंत्र चुनाव हुआ अपोजीशन डिमोक्रेटिक पार्टी को भारी सफलता मिली, "जलाल बायार" अध्यक्ष तथा "अदनान मुन्दरीस" प्रधानमंत्री चुने गये, इन दोनों ने लोकतांत्रिक शासन स्थापित किया, इस्लाम पर चलने की राह में जो प्रतिबन्ध

थे उनको समाप्त किया, अरबी में अज़ान और इकामत की अनुमति दी गई 17 जून 1950 ई0 नवीन तुर्की का स्मरणीय ऐतिहासिक दिन है, जब 24 वर्षों पश्चात तुर्की की मस्जिदों में पहली बार अरबी में अज़ान दी गई जिसकी खुशी में पूरे देश में उत्सव का वातावरण रहा लोग सड़कों पर निकल आए, मस्जिदें नमाज़ियों से भर गईं, मुस्तफा कमाल पाशा ने हज पर प्रतिबन्ध लगा दिया था 1950 ई0 में वह प्रतिबन्ध समाप्त हुआ, 25 वर्षों बाद 460 हाजियों ने हज किया।

अदनान मुन्दरीस ने इस्लामी उलूम (इस्लामिक ज्ञान) के प्रसारण तथा प्रकाशन और मुस्लिम जनता में इस्लामिक स्प्रिट जाग्रित करने में भरपूर भाग लिया, उन्होंने वह बेड़ियां काट दीं जो मुस्तफा कमाल ने इस्लाम के पांव में डाल दी थीं, वह मुस्तफा कमाल के कम्युनिस्ट दृष्टिकोण के घोर विरोधी थे, वह देश के सेक्यूलर विधान को बदल कर इस्लामिक विधान लाना चाहते थे, परन्तु 1960 ई0 में जनरल जमाल गरसल के नेतृत्व में तुर्की में दूसरा सैनिक विद्रोह हुआ, जमाल मरसल ने अध्यक्ष जलाल बयार और प्रधानमंत्री अदनान मुन्दरीस को जेल में बन्द करके सत्ता पर अधिकार जमा लिया और अदनान मुन्दरीस पर देश में विश्वास घात का आरोप लगा कर फांसी दे दी। 1974 ई0 तक सैनिक तानाशाही शासन चलता रहा, परन्तु 1974 ई0 में तुर्की में फिर डेमोक्रेटिक शासन स्थापित हुआ जो 1980 ई0 तक चलता रहा, फिर 1980 ई0 में जनरल कनआ़न अवरन ने फिर चुनी हुई हुकूमत का तख्ता पलट कर सत्ता अपने हाथ में ले ली, यह तुर्की में होने वाला तीसरा सैनिक विद्रोह था, सैनिक तानाशाही का यह काल 1995 ई0 तक चला।

1995 ई0 में फिर चुनाव हुआ इस चुनाव में रिफाह पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ और उसके नेता नजमुद्दीन अरबकान 1996 ई0 में प्रधानमंत्री चुने गये, नजमुद्दीन अरबकान यह दूसरे प्रधानमंत्री थे जो अपने में स्पष्ट इस्लामी छाप रखते थे, अदनान मुन्दरिस तो 10 वर्षों तक शासन चलाने में सफल रहे थे, परन्तु नजमुद्दीन अरबकान एक वर्ष से अधिक शासन न चला सके, 1997 ई0 में सेना ने चौथी बार विद्रोह किया, अरबकान को पदच्युत करके उनकी रिफाह पार्टी को अवैधानिक घोषित कर दिया, यह सैनिक तानाशाही 5 वर्षों तक चलती रही, 2002 ई0 में फिर पार्लमानी चुनाव हुआ जिस में "इन्साफ व तरक्की" पार्टी ने बहुमत प्राप्त किया, इस पार्टी के नेता रजब तय्यिब अर्दगान प्रधानमंत्री और अब्दुल्लाह गुल अध्यक्ष चुने गये, इसी प्रकार 2007 ई0 और 2011 ई0 के चुनाव में "इन्साफ व तरक्की" पार्टी ने बहुमत प्राप्त किया और रजब तय्यिब अर्दगान प्रधानमंत्री बने रहे, 11 अगस्त 2014 ई0 को तुर्की में अध्यक्ष का चुनाव समस्त जनता के वोटों द्वारा कराया गया जिसमें रजब तय्यिब अर्दगान ने स्पष्ट रूप में सफलता प्राप्त की और वह तुर्की के अध्यक्ष चुन लिये गये।

रजब तय्यिब अर्दगान शुद्ध इस्लामिक वादी हैं वह बड़ी चतुराई से तुर्की में इस्लामी पहचान वापस लाने का प्रयास कर रहे हैं, उन्होंने "कमाली" काल के स्त्रियों के नकाब पर लगे प्रतिबन्ध को समाप्त करवाया, अब मुसलमान स्त्रियां तुर्की में नकाब पहने नज़र आती हैं, उन्होंने गज्जा के बे सहारा मुसलमानों के लिए इम्दादी सामान रवाना किया तो इस्राईली सैनिकों ने उनके बहरी (समुद्री) बेड़े पर आक्रमण करके कई तुर्क कर्मचारियों को शहीद कर दिया और इम्दादी सामान ग़ज़्ज़ा तक पहुचने नहीं दिया उसकी प्रतिक्रिया में रजब तय्यिब अर्दगान ने इस्राईल से अ़पने सम्बन्ध तोड़ लिये, अंतर्राष्ट्रीय फोरम में इस्राईल को बुरी तरह नंगा किया, अन्ततः इस्राईल क्षमा मांगने, नुक्सान का बदला देने तथा इम्दादी सामान ग़ज़्ज़ा पहुंचाने की अनुमति देने पर विवश हुआ और रजब अर्दगान के प्रयासों से ही, इस्राईल की ओर से ग़ज़्ज़ा का घेरा समाप्त हुआ, यह वही रजब अर्दगान हैं जो 30 लाख शामी शरणार्थियों को तुर्की में शरण दिये हुए हैं, पाँच वर्षों से उनको मेहमान बना कर रखा है, उनके खाने पीने और दूसरी आवश्यकताओं का प्रबन्ध कर रहे हैं, यह वही अर्दगान हैं जिन्होंने मिस्र के निर्वाचित लोकतांत्रिक शासन का तख्ता पलटने वाले अब्दुल फत्ताह सीसी का स्पष्ट विरोध किया था और स्पष्ट शब्दों में निन्दा की थी, यहां तक कि सीसी के साथ एक सभा में बैठना भी स्वीकार नहीं किया था।

बीते 14 वर्षों से अर्दगान तुर्की की सत्ता संभाले हुए हैं, उन्होंने तुर्की में शिक्षा तथा अर्थव्यवस्था को पर्याप्त ऊँचाईयों तक पहुंचा दिया है, वह लगातार जनता के लिए कल्याणकारी कार्य करते हुए धीरे धीरे वह देश में इस्लामी तथा शरई विधान लाना चाहते हैं, इस कार्य में सबसे बड़ी रुकावट "कमाली" काल के प्रशिक्षित सैनिक जनरल करनल तथा न्यायालय के न्यायाधीश हैं, इन्हीं लोगों ने अमरीकी गुप्त संगठनों के संकेत पर वर्तमान विद्रोह का नेतृत्व किया था, अल्लाह तआला ने इस विद्रोह को असफल कर के तुर्क जनता पर बड़ा उपकार किया, तुर्की में होने वाला यह पांचवां सैनिक विद्रोह था, जिसको तुर्क जनता ने अपनी अनुपम वीरता तथा साहस से कुचल दिया और सारे संसार के लोगों को यह सबक दिया है कि इसी प्रकार की एकता साहस और वीरता का प्रदर्शन किया जाए तो इमरीका तथा यूरोप की गुप्त ऐजेंसियों के संकेतों पर उठने वाले विद्रोह को सरलता से कुचला जा सकता है, सैनिक शासन तथा तानाशाही बहुत ही बुरी शासन व्यवस्था है, यह शाही पैतृक शासन व्यवस्था से भी खराब है, तुर्क जनता इस वास्तविकता को समझ चुकी है, यही कारण था कि अध्यक्ष रजब तय्यिब अर्दगान के केवल 12 सिकेण्ड इस्काइप द्वारा दी गई वेकअप काल पर तुर्क जनता सिर पर कफ़न बांध कर जान हथेलियों पर रख कर सड़क पर निकल आई, औरतें, मर्द, बच्चे, बूढ़े

सब सड़क पर आ गये निहत्थी जनता शस्त्रधारी सैनिकों के सामने आ खड़ी हुई, इस प्रकार लोकतंत्रता वध होने से बच गई।

तुर्की में उठने वाले इस सैनिक विद्रोह के पीछे अमरीकी गुप्त एजेंसी का हाथ होने का बड़ा तर्क अमरीकी सेना के पूर्व अधिकारी रालफ पटीरस की वह प्रतिक्रिया है जो विद्रोह के असफल होने पर सामने आई है, वह कहता है तुर्की की अन्तिम आशा भी टूट गई और कहता है कि तुर्क शासक की ओर से तुर्की में इस्लामी विधान की स्थापना से जो तुर्की को पतन की ओर ले जाने वाला है उसको रोकने की अन्तिम आशा भी टूट गई, अमरीका के इस पूर्व अधिकारी ने यहां तक कह दिया कि तुर्की मेंजो इस्लाम जागरूकता और खिलाफत की स्थापना का आन्दोलन चल रहा है वह अमरीका तथा यूरोप की योजनाओं को मिट्टी में मिला कर रख देगी, तुर्की का शस्त्र भारी सैनिक विद्रोह में जो इस आन्दोलन को रोकने का अन्तिम प्रयास था जो असफल हो चुका है, इन सभी बातों से स्पष्ट है कि पर्दे के पीछे से कुछ किया जा रहा था जिस की असफलता पर वह दुखी हो रहा है।

अमरीकी गुप्त ऐजेन्सी सी0आई0ए0 के षड़यंत्र का बड़ा तर्क उन तुर्क सैनिकों के वह बयानात हैं जिन को विद्रोह की असफलता के पश्चात नियंत्रण में लिया गया था। उन लोगों ने स्पष्ट रूप से यह बयान दिया कि अमरीका का पूर्व जनरल "जान केप हील" जिसने अपने रिटायर्ड होने से पहले अफगानिस्तान में अमरीकी आक्रमण का नेतृत्व किया था उसने गुप्त रूप से तुर्की के दौरे किये और तुर्की में विद्रोह समर्थक सैनिक अधिकारियों में अरबों डालर वितरित किये और उन लोगों को विद्रोह पर उक्साया।

जो भी हो विद्रोह तो असफल हो चुका है परन्तु षडयंत्र के द्वार खुले हुए हैं, सी0आई0ए0 के कर्मचारी सरलता से हार मानने वाले नहीं हैं, वह एक के पश्चात दूसरे और दूसरे के पश्चात तीसरे षडयंत्री हथियार अपनाते रहेंगे, अमरीकी गुप्तचर एजेन्सी और दूसरी यूरोपीय तथा इस्राईली एजेंसियों का सबसे बड़ा निशाना अभी तुर्की ही है, वह किसी भी तरह अर्दगान शासन का अन्त चाहते हैं इसलिए कि उनके अन्दर से एक शक्तिशाली इस्लामिक नेतृत्व की महक आ रही है, जो अमरीका और यूरोप वालों को अप्रिय है।

इस्लामिक चिन्तक हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी रह0 ने 1989 ई0 में तुर्की का दौरा किया था, उस अवसर पर तुर्क जनता को कुछ लाभदायक परामर्श दिये थे और भविष्य की आशंकाओं से सावधान किया था, और कहा था कि यूरोप और अमरीका तुर्की को मुसलमान नहीं देखना चाहते हैं, उन्होंने अण्डर ग्राउण्ड सुरंग बिछा रखी है अर्थात उनके गुप्त षडयंत्र चल रहे हैं और जो काम वह अपनी सेना और तोपों के द्वारा नहीं कर सके वह अन्दरूनी गुप्त साधनों से कर रहे हैं, यूरोप, अमरीका और उनके एजेंटों का यही

प्रयास है कि तुर्की को दूसरा स्पेन बना दिया जाये अतः बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह अपने करम से तुर्की के इस वीर पुरुष रजब तय्यिब अर्दगान को और उनके नेतृत्व को तथा तुर्क जनता को सुरक्षा प्रदान करे। आमीन।

❖❖❖

दीने इस्लाम.........

सुन्नत और सलफ़ के अक़ायद पर अपने ग़ौर व फ़िक्र की बुन्याद रखे और फ़ल्सफ़ा व इल्मे कलाम को बहस के क़ाबिल समझे जिसकी कुछ बातें मानी जा सकती हैं। और कुछ नहीं भी मानी जा सकती हैं। यूनानी फ़ल्सफ़ा का सिर्फ़ वह हिस्सा कुबूल करे जो सही दलील से साबित हो। वह अरस्तु वग़ैरा को खुदाये अलीम व ख़बीर का दर्जा न दे न उन्हें ख़ता से महफ़ूज़ अंबियाये मासूमीन समझे। उन्हें कुछ ऐसे बड़े आलिमों की ज़रूरत थी जो फ़ल्सफ़ा पर पूरी दस्तरस रखते हों और यूनानी फ़िलास्फ़रों से आंखें मिला कर बातें कर सकें। उनका कुर्आन पर पूरा—पूरा ईमान हो और जो फ़ल्सफ़ा और उसके भारी भरकम इस्तेलाहात की गुलामी से हर तरह आज़ाद हों। वह इस हदीस की तरजुमानी करते हों:

तर्जुमाः *"वह गाली लोगों की तहरीफ़ बालित परस्तों के ग़लत इंतेसाब और जाहिलों की तावीलात से दीन की हिफ़ाज़त करते हैं"।*

ऐसे उल्माये इस्लाम से कोई दौर ख़ाली नहीं रहा। इन नुमायां शख़सियतों में आठवीं सदी हिज्री के आलिमे जलील शैखुल—इस्लाम हाफ़िज़ इब्न तैमिया हर्रानी रह0 (मुतवफ़्फ़ी—728 हिज्री) हैं। वह किताब व सन्नत पर पूरा ईमान रखते थे। उन्होंने यूनानी फ़ल्सफ़ा का गहरा मुतालेआ किया था वह फ़ल्सफ़ा के बेबाक नाक़िद थे। उनको खुदा ने एक ऐसा शागिर्द अता फ़रमाया जो उनके नक़्शे क़दम पर चलते रहे। यह थे अल्लामा इब्न कैय्यम जोज़िया रह0।

(मुतवफ़्फ़ी—791 हिज्री)।

इनके बाद अगर किसी का नाम पूरे एतमाद (विश्वास) से लिया जा सकता है तो वह "हुज्जतुल्लाह हिलबालेगा" के मुसन्निफ़ (लेखक) हकीमुल इस्लाम हज़रत शाह वली उल्लाह देहलवी रह0।

(मुतवफ़्फ़ी—1176 ई0) हैं।

उन्होंने हिन्दुस्तान में इलमे हदीस को रिवाज दिया और इब्न तैमिया और मुहद्दसीन का उस वक़्त बचाव किया जब उनका नाम लेना मुश्किल था। और इस्लामी शरीअत पर ऐसी किताबें लिखीं जिनकी नज़ीर आसानी से नहीं मिल सकती। उनकी किताब "अलअक़ीदतुलहसना" में पहले सुन्नत के अक़ायद का वह निचोड़ आ गया है जिससे हर पढ़े लिखे मुसलमान को वाक़िफ़ होना चाहिए जो उनके अक़ायद को अपना शेआर बनाना चाहते हों। इसलिए इस बाब (अध्याय) में इसी को बुन्याद बनाया गया है।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः कुछ लोग कहते हैं कि मर्दों के लिए एक दिरहम वज़न की चाँदी की अंगूठी पहनना मस्नून है सही क्या है? किसी और धातु की अंगूठी पहनने का क्या हुक्म है?

उत्तरः मर्दों के लिए एक मिस्क़ाल (4 ग्राम 374 मिली ग्राम) वज़न की या उससे कम वज़न की चांदी की अंगूठी पहनना दुरुस्त है। (मजमउल अनहारः 4/196) अगर कोई अंगूठी न पहने तो कोई हरज नहीं मर्दों के लिए सोने की अंगूठी पहनना हराम है किसी और धातु की अंगूठी पहनना मर्दों के लिए मकरूह है।

प्रश्नः नगदार अंगूठी पहनने का क्या हुक्म है? कुछ लोग कहते हैं कि बाज नगों में यह खासियत होती है कि उस नग के साथ अंगूठी पहनने वाला बलाओं से महफूज़ रहता है ऐसा अक़ीदा रखने का क्या हुक्म है?

उत्तरः नगदार अंगूठी पहनना जाइज़ है लेकिन किसी नग के बारे में यह अकीदा रखना कि वह बलाओं से बचाता है शिर्किया अकीदा है उस से बचना लाजमी है।

प्रश्नः हलाल जानवर की ओझड़ी खाना कैसा है?

उत्तरः हलाल जानवर की ओझड़ी खाना जाइज़ है।

प्रश्नः मेरे इलाके के कुछ सुननी मुसलमान सफर के महीने में शहादते हुसैन का चालीसवां मनाते हैं, आशूरा की शाम की तरह चबूतरे या तख़्त पर ताजिया रखते हैं, नौहा पढ़ते हैं, ढोल ताशा झाँझ का बाजा बजाते हैं, दिन में वह ताजिया बाजे गाजे के साथ और मरसिया पढ़ते हुए ले जा कर दफ्न करते हैं और कहते हैं यह सब हुसैन की याद और महब्बत में करते हैं, शरीअत में इस अमल का क्या हुक्म है?

उत्तरः हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत का चहल्लुम या चालीसवां मनाना जाइज़ नहीं, उसमें ताजिया रखना उसके गिर्द चरागां करना, नौहा पढ़ना, मातम करना, बाजा बजाना और बाजे गाजे के साथ ताजिया दफ्न करना यह सारे काम नाजाइज़ हैं, किसी वफात पाये या शहीद हुए मुसलमान की महब्बत में उस के लिए मगफ़िरत की दुआ करना चाहिए, अल्लाह की राह में कुछ खर्च करके और कुर्आन की तिलावत कर के ईसाले सवाब करना चाहिए, जो काम चालीसवां के सिलसिले में कुछ सुन्नी मुसलमानों की तरफ मन्सूब किये गये हैं सुन्नी मुसलमानों को चाहिए कि उन से तौबा करें और हज़रत हुसैन रज़ि0 के नाना की शरीअत पर चलें।

प्रश्नः मुशतरक खान्दान में चचाजाद भाई से पर्दे का क्या हुक्म है?

उत्तरः नामहरम रिश्तेदारों से भी शरई पर्दा ज़रूरी है।

प्रश्नः आजकल माशा अल्लाह हाजियों की अधिकता के कारण मिना में सब जगहें भर जाती हैं और मुजदल्फा में हाजियों के खेमे लगाये जाते हैं ऐसी सूरत में जो हाजी मुजदल्फा के खेमे में ठहरते हैं उन को मिना में

ठहरने की सुन्नत छोड़ना पड़ती है उन के लिए क्या हुक्म है?

उत्तर: इमाम अबू हनीफा और दूसरे बाज इमामों के नजदीक जमरात (शैतानों) को कंकरियां मारने के दिनों में मिना में ठहरना सुन्नत है, इसलिए उज़्र के बिना जमरात को कंकरियां मारने के दिनों में मिना के बजाय मुजदल्फा में हाजी का ठहरना सुन्नत के खिलाफ होगा। परन्तु आज कल मिना में जगह न मिलने के सबब शासन मजबूरन मुजदल्फा में खेमें लगवाता है अतः हाजियों के लिए मुजदल्फा में ठहर कर रमी करना मकरूह नहीं है, रिवायत में है कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास के जिम्मे हाजियों को पानी पिलाने का काम था उन्होंने चाहा कि वह इस खिदमत के लिए मिना की रातें मक्के में बिताएं अतः उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस की अनुमति मांगी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्के में ठहरने की इजाजत दे दी (मुस्लिमः 7713) इस रिवायत से मालूम हुआ कि ज़रूरत पड़ने पर मुजदल्फा में हाजी ठहर सकते हैं।

प्रश्नः हाजी लोग अरफात से मुजदल्फा के लिए मगरिब की नमाज़ पढ़े बगैर रवाना होते हैं, अगर रास्ते में इशा का वक़्त हो जाये तो क्या वह रास्ते में मगरिब और इशा की नमाजें पढ़ सकते हैं या वह मुजदल्फा पहुंच कर दोनों नमाज़ें पढ़ें?

उत्तरः अरफात से मुजदल्फा के लिए हाजी लोग रवाना हों और रास्ते में इशा का वक़्त आ जाए तो वह रास्ते में मगरिब और इशा की नमाज़ें न पढ़ें बल्कि मुजदल्फा पहुंच कर मगरिब और इशा की नमाजें एक साथ अदा करें ऐसा करना वाजिब है।

प्रश्नः कुछ हज पर जाने वाले लोग तमत्तो हज के इरादे से मक्का पहुंच कर उमरा करते हैं फिर वहां से अपने किसी रिश्तेदार के पास जददा चले जाते हैं वहीं उमरे का सर मुंडाते हैं और वहीं ठहरे रहते हैं फिर 8 जिल्हिज्ज को हज का एहराम बांध कर मिना जाते हैं और हज पूरा करते हैं उन का यह हज हज्जे तमत्तो हुआ या नहीं?

उत्तरः जद्दा मीकात के अन्दर है लिहाजा तमत्तो हज का उमरा करने के बाद वहां ठहरने की गुंजाइश है और फिर 8 जिल्हिज्ज को एहराम बांध कर मिना आए और हज अदा किया तो तमत्तो हज हो गया। रही बात उमरा के बाद सर मुंडाने की तो यह सर मुंडाना हरम के हुदूद ही में चाहिए अगर जददा जा कर उमरे के बाद सर मुंडाया तो दम देना होगा।

(दुर्रुल मुख्तारः2/247)

प्रश्नः हज के दौरान जो दम वाजिब हो जाता है अगर मक्के में दम न दे कर हिन्दोस्तान में आ कर दम का जानवर ज़ब्ह करें तो दम अदा हो जायगा या नहीं?

उत्तरः फर्ज हज के दौरान किसी गलती पर जो दम वाजिब होता है यानी जानवर ज़ब्ह करना पड़ता है उसकी अदायगी हरम के हुदूद में या मनहर में जरूरी है हिन्दोस्तान में दम का जानवर ज़ब्ह करने से दम अदा न हेगा।

(अलबहरुर्राइकः 2/604)

❖❖❖

दीनी वातावरण की उपलब्धता में माता पिता का उत्तरदायित्व

—मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी—   हिन्दी इम्ला हुसैन अहमद

मनुष्य के स्वभाव पर मौलिक रूप से भलाई का अधिकार है इसी कारण व्यक्ति सच्चाई, न्याय, निष्ठा सहानुभूति तथा लज्जा भाव को प्रशंसा योग्य समझता है, इसके विपरीत झूठ, अत्याचार, छल, कपट, निर्दयता तथा अशलीलता को अप्रिय रखता है, यहां तक कि ऐसा भी होता है कि एक व्यक्ति झूठ बोलता है लेकिन अगर उसे कोई झूठा कह दे तो उसे कष्ट होता है और कभी तो अपने झूठ को सच सिद्ध करने का प्रयास करता है। मनुष्य कभी अशलीलता का काम करता है परन्तु अपने अशलील कार्य को छुपाने की भरपूर चेष्टा करता है वास्तव में यह प्रकृति की मांग है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हर बच्चा अपने स्वभाव में इस्लाम पर जन्म लेता है, अर्थात अल्लाह के अज्ञापालन के स्वभाव पर जन्म पाता है परन्तु उसके माता पिता उस को नसरानी या यहूदी बना देते हैं। (मुसनद अहमद,: 7181)

लेकिन कभी ऐसा भी होता है कि वातावरण के दबाव से मनुष्य अपने वास्तविक स्वभाव से हट जाता है उस का झुकाव पापों की ओर बढ़ने लगता है, अत्याचार, अन्याय, अशलीलता, अहंकार और दूसरों के अपमान से उस के मन को संतोष मिलता है, यह मनुष्य की वास्तविक प्रवृति नहीं है अपितु बाहर के विकृत वातावरण के प्रभाव से यह विमुखता उत्पन्न हुई है।

बाहरी वातावरण की जो बातें मनुष्य को अत्यधिक प्रभावित करती हैं, वह मौलिक रूप से दो हैं, एक वातावरण दूसरा शिक्षा, शिक्षा का अर्थ तो स्पष्ट है, वातावरण का अर्थ है चारों ओर की दशा तात्पर्य यह है कि मनुष्य जिन लोगों के बीच में रहता है उनके विचार दृष्टिकोण तथा उन के व्यवहारिक जीवन से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता, पानी की प्रकृति ठंडा होना है वह केवल स्वयं ठंडा नहीं होता अपितु दूसरों को भी ठंडक पहुंचाता है, परन्तु जब अधिक गर्मी होती है और धूप में तीव्रता आ जाती है तो पानी भी गर्म हो जाता है और पीने वालों की प्यास बुझाए नहीं बुझती, इसी प्रकार मनुष्य पर उस के वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

यदि मनुष्य को अच्छे लोगों, सदाचरण वालों का वातावरण मिल जाता है तो उसकी प्राकृतिक योग्यता प्रवान चढ़ती है, तथा उस के गुण दो गुने हो जाते हैं, उस की उपमा ऐसी है जैसे स्वच्छ पानी में बर्फ डाल दी जाये उस से उस की ठंडक और बढ़ जाती है और यह पानी पीने वाले के लिए अमृत बन जाता है, यदि मनुष्य को विकृत वातावरण मिले तो उस के वास्तविक गुण भी नष्ट हो जाते हैं, उस की मिसाल उस स्वच्छ पानी की है जिस में किसी ने गन्दगी डाल दी हो।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वातावरण के महत्व तथा उसके प्रभाव को एक उदाहरण द्वारा समझाया है आप ने फरमाया कि भले आदमी की उपमा ऐसी है जैसे उस के पास कस्तूरी हो उस की संगत से अगर उस से कस्तूरी न मिल सके तो उस की सुगंध तो मिल ही जाएगी तथा खराब आदमी की संगत की उपमा भट्टी झोंकने वाले की सी है अगर उस का कपड़ा न जले तो भट्टी के धुएं से नहीं बच सकता। (बुखारीः 5534) वातावरण के इस महत्व के कारण कुर्आन और हदीस में इस ओर विशेष ध्यान दिलाया गया है कि आदमी अच्छे माहौल में रहे और अपने को बुरे माहौल से बचाये, पवित्र कुर्आन में है कि अनुवादः "तुम सच्चे लोगों के साथ रहा करो" (तौबाः119)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदीना हिज़रत के बाद और फत्हे मक्का से पहले तमाम मुसलमानों के लिए यह ज़रूरी किया गया था कि वह अपने इलाके को छोड़ कर मदीने में आ बसें, अतएव उस समय के जजीरतुल अरब के तमाम मुसलमान मदीने में आ बसे थे। उस समय हिजरत करने वालों की संख्या कुछ सौ थी परन्तु फत्हे मक्का के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जो लोग थे उन की संख्या दस हजार थी और सपष्ट है कि फत्हे मक्का के समय मदीना मुसलमानों से बिल्कुल खाली नहीं हो गया था, बच्चों, बूढ़ों और औरतों के अतिरिक्त बहुत से जवान भी मदीने में रहें होंगे ताकि मदीना सुरक्षित रहे, उनमें से अधिकांश लोग हिजरत करके मदीना आये थे, हिजरत के आदेश का मौलिक कारण यही था कि लोगों को एक दीनी उच्च स्तर का वातावरण मिले, ताकि हिजरत करने वाले लोग मदीने में मुकीम दीन के जानकारों की संगत में रह कर उन से दीन सीख सकें और अपने आचरण संवार कर इस्लामी नैतिकता का आदर्श बन सकें, यह भले वातावरण का ही प्रभाव था कि जो लोग अत्याचार, हत्या करने, लूटमार करने, रक्त पात करने, मदिरा पान करने तथा अशलीलता में प्रसिद्ध थे, वह सब ऐसे सदाचारी बन गये और उन्होंने ऐसी उच्चतर सोसाइटी छोड़ी जिस की उपमा अल्लाह के नबियों को छोड़ कर धरती पर नहीं मिलती, यह सब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत और अच्छे वातावरण का प्रभाव था।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन विभिन्न तरीकों से वातावरण बनाने की शिक्षा दी, आप ने अच्छे लोगों की संगत अपनाने का प्रलोभन दिया, आप ने फरमाया कि फर्ज नमाज़ों के अतिरिक्त दूसरी नमाज़ें घर में पढ़ा करो। यह सर्वोत्तम नियम है। (बुखारीः 7290)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि आप ने फरमाया लोगो अपने घरों में भी नमाज़ पढ़ा करो, घरों को कब्रिस्तान मत बनाओ। (मुस्लिमः 777) दीन के आलिमों ने भी लिखा है कि उत्तम नियम यह है कि मुअक्किदा सुन्नतें घर में पढ़ी जायें। (हाशिया तहतावी बयान नवाफिलः 1/30)

ध्यान दीजिए कि मस्जिद से अधिक स्वच्छ स्थान और कौन हो सकता है जो नमाज़ पढ़ने के लिए उचित हो, फिर भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुन्नत और नफ्ल नमाज़ों को घर में पढ़ने की शिक्षा दी, जाहिर में इस का कारण यही मालूम होता है कि घर में नमाज़ पढ़ने से घर का वातावरण दीनी बनेगा बच्चे जब बड़ों को नमाज़ पढ़ते देखते हैं तो प्रायः वह उनकी नक़्ल करने लगते हैं और नमाज़ का महत्व उन के मन में बैठ जाता है।

इस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घर में पवित्र क़ुर्आन के पाठन का प्रलोभन दिया है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अपने घरों को कब्रिस्तान मत बनाओ उन में क़ुर्आन पढ़ा करो विशेष कर सुरतुल बकरा पढ़ा करो कि उस के पढ़ने से घर से शैतान भाग जाता है। (मुस्लिमः780) घर में क़ुर्आन पढ़ना ऐसा कार्य है जो घर का वातावरण बनाने में बड़ा प्रभावकारी है, घर के बच्चों के मन में यह बात बैठ जाती है कि हम को भी क़ुर्आन पढ़ना चाहिए, इसी प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घर में अल्लाह के जिक्र की श्रेष्ठता बयान की है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस घर में अल्लाह का जिक्र किया जाता है और जिस घर में नहीं किया जाता है उस की उपमा जीवित तथा मृतक व्यक्ति की है। (मुस्लिमः779)

इसी प्रकार इस बात को भी अच्छा बताया गया है कि घर में नमाज़ के लिए कोई स्थान नियुक्त कर लिया जाये और घर में जब नमाज़ पढ़नी हो तो उसी स्थान पर पढ़ी जाय हदीस और फिक़्ह की किताबों में उस स्थान को मस्जिदुल बैत कहा गया है, वातावरण को विकृत होने से बचाने के लिए शरीअत के उस हुक्म को देखा जा सकता है कि अगर कोई ज़मीन या मकान बेचा जाय तो उस जमीन या मकान के पड़ोसी को हक़्क़े शुफ़अः (खरीदने का पहला अधिकार) प्राप्त होता है, अगर पड़ोसी उतनी कीमत देने को तैयार हो जितनी कीमत कोई दूसरा दे रहा है तो पड़ोसी के हाथ बेचना अनिवार्य है यह बात हदीस से साबित है। (देखिए सुनने अबी दाऊदः3518)

वातावरण का प्रभाव यूं तो हर आयु के व्यक्ति पर पड़ता है, परन्तु बच्चों पर उस का प्रभाव अधिक होता है, मनुष्य के शरीर में सब से पहले मस्तिष्क का विकास होता है और उस मस्तिष्क का विकास तीव्रता से होता है, यही कारण है कि बच्चों में किसी बात को ग्रहण करने की योग्यता अत्यधिक होती है, वह बोलने वालों से शब्द सीखता है, चलने वालों से चलने की प्रक्रिया सीखता है, अपने बड़ों से उठने बैठने, खाने पीने के नियम सीखता है, गाने सुन कर गुन गुनाता है, गालियां सुनने पर गालियां उस की ज़बान पर चढ़ जाती हैं, और अगर अच्छी बातें सुनता है तो उन को दोहराता है, मां बाप को नमाज़ पढ़ते हुए देखता है तो रुकूअ़ और सज्दे की नक़्ल करता है, मस्जिद जाते हुए देखता है, तो मस्जिद जाने का प्रयास करता है। बच्चे अपने वालिद के सर पर टोपी देख कर टोपी पहनना चाहते हैं और

बच्चियां अपनी मां के सिर पर इस्कार्फ और जिस्म पर निक़ाब देख कर इस्कार्फ़ और निक़ाब पहनना चाहती हैं, तात्पर्य यह है कि बच्चा अपने वातावरण से ग्रहण करता है।

वर्तमान परिस्थिति में बच्चा प्रातः सात बजे स्कूल जाने की तैयारी करता है और सायंकाल पांच बजे या उसके पश्चात वापस आता है। जाने से पहले का समय सोने और तैयारी करने में बीत जाता है, वापसी के बाद भी मगरिब तक का वक़्त खेलकूद में गुजरता है, इस प्रकार उस का पूरा दिन स्कूल के वातावरण में बीतता है, मगरिब के बाद तीन साढ़े तीन घण्टे पश्चात बच्चे सो जाते हैं, इस लिए कि उनको सात आठ घण्टे सोना चाहिए मगरिब के पश्चात के समय में उन को स्कूल का दिया हुआ होम वर्क करना होता है, उसी में खाना पीना भी है। इसलिए बहुत कम समय ऐसा बचता है, जिस में वह अपने माता पिता तथा भाई बहनों के साथ बैठें, कुछ समय मगरिब बाद और कुछ समय फज्र बाद उनके साथ बैठने के लिए पाता है, बच्चे के पिता आफिस या अपने कारोबार से उस समय आते हैं जब बच्चा सो चुका होता है, मां खाना पकाने और खुदा न करे टीवी देखने की लत हो तो टीवी देखने में अपना समय बिता देती है इस प्रकार प्रायः बच्चों के लिए मां बाप के पास कोई समय नहीं होता।

स्कूल का वातावरण इस प्रकार है, यदि स्कूल ईसाई मिशन का है तो बच्चा प्रातः से संध्या तक ईसाई तौर तरीके देखता है, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का चित्र इस प्रकार लगाया हुआ होता है कि जैसे वह खुदा हैं और बन्दों पर अपने दया का हाथ रख रहे हैं, यदि हिन्दू व्यवस्था वाला स्कूल है तो वहां मूर्तियां हैं, बन्दे मात्रम का मुशरिकाना तराना (अनेकेश्वारवाद गान) है वहां हिन्दू त्योहार मनाये जाते हैं और प्रयास होता है कि बच्चे पर हिन्दू आइडियोलाजी अंकित हो कर रह जाये, मुस्लिम व्यवस्था वाले स्कूलों में आदर्श शिक्षा कि गिरावट के साथ नैतिक प्रशिक्षण का अभाव है मिश्रित शिक्षा सभी स्कूलों में है, स्कूल का युनिफ़ार्म लज्जाहीन है कल्चरल प्रोग्राम के नाम पर अशिष्ट ड्रामा कराया जाता है और लड़कियां नृत्य करती हैं, कुछ ही मुस्लिम स्कूल आदर्श स्कूल हैं और वह प्रशन्सा योग्य हैं।

इन परिस्थितियों में माता पिता का दायित्व अधिक बढ़ जाता है कि वह अपने घरों में दीनी वातावरण बनाएं, छुट्टी के समय अपने बच्चों के साथ रहें अवकाश काल में उन को दीन सिखायें, नमाज़ पढ़ना सिखायें और नमाज़ पढ़ायें कुर्आन पढ़ायें प्रति दिन कुर्आन पढ़ने की आदत डलवायें घर की स्त्रियां इस्लामी पर्दे वाला वस्त्र पहनें, घर के बड़े आपसी बात चीत तथा उठने बैठने में शिष्टाचार के उदाहरण प्रस्तुत करें, ज़बान से ऐसी बात न निकालें जिससे बच्चा गलत बात सीखे और बच्चों की प्रशिक्षण का कोई अवसर न गवाएं वर्तमान परिस्थिति में यदि हम ने अपने बच्चों के लिए दीनी वातावरण उपलब्ध न किया तो भविष्य में उन का इस्लाम खतरे में पड़ जायेगा। इसलिए कि वर्तमान

शिक्षा व्यवस्था इस्लाम रहित है तथा स्कूलों, विद्यालयों का वातावरण आचरणों को विकृत करने वाला है इन परिस्थितियों में अगर मुस्लिम माँ–बाप ने अपने बच्चों के लिए उचित इस्लामिक वातावरण उपलब्ध करने का प्रयास न किया तो यह बच्चों पर निः सन्देह बड़ा अत्याचार होगा और उनके माँ–बाप तथा अभिभावक अल्लाह के सामने उत्तर दायी होंगे।

❖❖❖

सूचना प्रसारण के ....

पवित्र क़ुर्आन में वर्णित क़ौमों की सीखप्रद घटनाएं एवं सूचना प्रसारण के उच्चतर उदाहरणः-

पवित्र क़ुर्आन में विभिन्न क़ौमों के हालात इस प्रकार बयान किये गये हैं कि उनसे दूसरी आने वाली क़ौमें सीख ले कर अपना जीवन बिताएं और अपनी कठिनाइयों में उन की घटनाओं से मार्गदर्शन लें मनुष्य दूसरे भले मनुष्यों से सीख ले कर अपने जीवन को संवारता है तथा अच्छे बुरे में अन्तर से परिचित होता है।

एक जानकार, अगलों की भली तथा आदर्श सूचनाओं को दूसरों तक पहुंचाता है इस विषय पर पवित्र क़ुर्आन में वर्णित बहुत से उदाहरण विद्यमान हैं जिन को दूसरों तक पहुंचाना लाभदायक है। पवित्र क़ुर्आन में इस प्रकार की व्यक्तिगत जीवन की सूचनायें दी हैं जिन से मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि भी होती है और बुराईयों से बचने का निर्देश भी मिलता है उदाहरणार्थ सू–रए–तकासुर मनुष्य के इस स्वभाव का वर्णन है कि मनुष्यों पर धन बढ़ाने का लोभ इतना बढ़ जाता है कि वह दूसरी आवश्यकताओं को भुला कर धन जुटाने में लगे रहते हैं, यहां तक कि उसको मौत दूसरे जीवन में पहुंचा देती है जहां वह नेकियों से खाली हाथ होता है और उसका सांसारिक धन कुछ काम नहीं आता।

इसी प्रकार सू–रए–मुतफ़्फ़िफ़ीन में मनुष्य के बुरे स्वभाव का वर्णन मिलता है कि वह धन के लोभ में लोगों को कम नाप–तौल कर देता है और लोगों से पूरी नाप तौल लेता है, पवित्र क़ुर्आन में उसके बुरे परिणाम की घोषण है इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन में मनुष्य की दूसरी प्रवृत्तियों तथा रुचियों का उल्लेख मिलता है इन उल्लेखित सूचनाओं का उद्देश्य यह है कि मनुष्य अपने जीवन के लिए उन से पथ प्रदर्शन ले यह सीख प्रद बातें अल्लाह के नबियों (उन पर अल्लाह की रहमत हो) के दावती कामों में मिलती हैं ताकि उन से सीख ले कर स्वच्छ समाज का निर्माण हो। पवित्र क़ुर्आन के यह उदाहरण सूचना प्रसारण के विषय में हमारा मार्ग दर्शन करते हैं कि हम सूचना प्रसारण के माध्यम से स्वच्छ समाज के निर्माण का काम लें।

❖❖❖

प्रेम संदेशा

"सच्चा राही" आया है
प्रेम संदेशा लाया है
मानव मानव भाई हैं
यह पाठ पढ़ाने आया है

न्याय

—मौलाना नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

न्याय शासन की सबसे उच्च नीति है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अनुयायियों को यह सिखाया ही नहीं बल्कि स्वयं उस पर अमल भी किया है। उसकी एक बानगी तो देखिए।

जुहर का समय है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में आते हैं और मिम्बर (व्याख्यान स्थल) पर विराजते हैं। आपके चचेरे भाई फज्ल बिन अब्बास भी साथ हैं। ये रबीउलअव्वल सन् 11 हिज्री की बात है। ये उन दिनों की बात है जब अनुपम आदर्श जगनायक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुन्या से पर्दा करने वाले थे और आपकी तबीयत बड़ी ख़राब थी। तेज बुखार की हालत में ही आप मस्जिद आए मिम्बर पर बैठ गये। फिर अपने चचेरे भाई को आदेश दिया कि मुसलमानों को जमा करो। जब सहाबा की एक बड़ी संख्या इकट्ठा हो गयी तो अल्लाह के रसूल ने उनके सामने व्याख्यान दिया। यह एक ऐसा व्याख्यान था जिसको सुन कर सहचरों के दिल भर आये।

इस अवसर का वर्णन करते हुए चचेरे भाई कहते हैं कि उस समय आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर में बहुत दर्द था। एक ज़र्द पट्टी मैंने आपके सर पर बांध दी थी। आप मेरे ही बाजू पर टेक लगा कर मस्जिद में दाखिल हुए थे। इसी दर्द की हालत में आपने व्याख्यान दिया। सर्व प्रथम तो अल्लाह की प्रशंसा की और फिर कहा, मेरा तुम लोगों से विदा लेने का समय निकट आ गया है। इसलिए चाहता हूं कि तुम लोगों से कहूं कि जिस किसी को मुझसे किसी प्रकार का बदला लेना हो तो ले ले। यदि मैंने किसी की कमर पर मारा है तो मेरी कमर हाजिर है। यदि मैंने किसी को बुरा—भला कहा है तो वो आए और मुझे सख़्त सुस्त कह ले। जिसका कोई बकाया है मुझ से ले ले और कोई भी ये ना सोचे कि बदला लेने से मेरे दिल में कोई बुरा ख़्याल आयेगा। अल्लाह का शुक्र है कि मैं ईर्ष्या और द्वोष से सुरक्षित हूं। इसलिए खूब समझ लो, ये मेरी हार्दिक इच्छा है कि जिसका भी मुझ पर कोई हक़ बनता हो वो अपना हक़ मुझसे ले ले या मुझे क्षमा कर दे, ताकि मैं अपने रब के पास सुकून से जाऊँ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ये कहने के उपरान्त प्रतीक्षा करते रहे कि कोई कुछ कहे, कोई आगे बढ़ कर बदला ले। मगर किसी ने कुछ न कहा न कोई आगे बढ़ा और कोई कहता भी क्या? करूणा सागर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी पर ज़ियादती की ही नहीं थी।

कुछ देर ठहर कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि ये एक

ऐलान इस बात के लिए पर्याप्त नहीं है, मैं फिर ऐलान करूंगा। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुहर की नमाज़ अदा की और फिर दोबारा मिम्बर पर बैठे और कहा, तुम में से कोई भी बदला लेने में तनिक भी न झिझके।

पवित्र कुर्आन में है "ऐ ईमान वालो! मज़बूती से न्याय पर अडिग रहो।" इस का प्रदर्शन हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कर रहे थे। विश्व के समस्त इतिहास कार और विद्वान इस पर एक मत हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने लिए किसी से कभी किसी प्रकार का बदला नहीं लिया। फिर भी बार–बार कह रहे थे कि मुझ से बदला ले लो।

जैसा कि शुरु में कहा गया कि न्याय शासन की सबसे उच्च नीति है। शासक छोटा हो या बड़ा न्याय सब के लिए होना चाहिए। जो शासक अपने में ही डूबा रहता है वह कभी कानून की हिफाज़त नहीं कर सकता। विश्व को पहला लिखित संविधान देने वाले मदीना के अनुपम सम्राट का जीवन चरित्र कुछ और ही है। जिस पवित्र व्यक्ति ने मदीने के इस्लामी क्षेत्र को दस लाख मील तक विस्तृत कर दिया, उनका हाल ये था कि अपने आप को लोगों से कभी अलग नहीं रखा। मगर क्या आज के शासकों से ऐसी कल्पना की जा सकती है?

कुर्आन मजीद के ....

और एहसास की चित्रता है। उदाहरणतः सूरः कहफ़ में घटना स्थल की तस्वीर कशीः और तू देखे धूप जब निकलती है बच कर जाती है उनकी खोह से दाहिने को और जब डूबती है कतरा जाती है उनसे बाई ओर वह मैदान में हैं उसके (सूरः कहफ़–17) कहफ वालों के बारे में इरशाद है "तुम उन्हें देख कर यह समझते कि वे जाग रहे हैं, हालांकि वे सो रहे थे, हम उन्हें दाएं, बाएं करवट दिलवाते रहते थे और उनका कुत्ता गुफा के दहाने पर हाथ फैलाए बैठाया अगर तुम कहीं झांक कर उन्हें देखते तो उलटे पांव भाग खड़े होते और तुम उनको देख कर भयभीत हो जाते। (कहफ़–18) इसके बाद तीसरा मनज़र उनके उठने का बयान किया गया है, "और इसी तरह उनको जगा दिया हमने आपस में पूछने लगे, एक बोला उनमें कितनी देर ठहरे तुम, बोले हम ठहरे एक दिन या एक दिन से कम बोले तुम्हारा रब ही ख़ूब जाने जितनी देर तुम रहे हो, अब भेजो अपने में से एक को रूपया दे कर अपना इस शहर में" इसी तरह हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम के क़िस्से में इरशाद है "सूरः मरयम 16–18), इनसानी तबीअत के तसव्वुर में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मुतालबा" "ऐ मेरे रब अपना दीदार कराइये कि मैं आप को देखूं" इसी प्रकार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का चांद तारों को देख कर प्रभावित होना,

(सूरः अनआम –76–78)। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ख़्वाहिश।

(सूरः माइदा –114)।

कुछ हास्यप्रद लघु कथाएं (फारसी से अनुवाद)

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

प्राचीन काल के राजा लोग अपने मनोरंजन के लिए जहां गवय्या रखते थे वहीं हास्य रस बातें सुनाने के लिए कहानी काल तथा विदूषक (लतीफागो) भी रखते थे। उनको मसखरा भी कहते थे।

(1) एक समय की बात है कि एक राजा प्रातः काल के समय अपने राजकुमार के साथ टहलने निकला, उस समय कुछ ठन्डक थी अतः दोनों राज्यकीय दोहरे वस्त्र में थे, साथ में सेवा के लिए तथा दिल बहलाने के लिए एक मसखरा भी था। टहलते—टहलते जब सूरज निकल आया और ढन्डक न रही तो दोनों ने अपने ऊपरी वस्त्र (लांगकोट आदि) उतार कर मसखरे के कांधे पर रख दिये, मसखरे ने प्रसन्नता पूर्वक दोनों के वस्त्र अपने कांधे पर लाद लिये। राजा ने दिल लगी करते हुए मसखरे से कहा, ऐ मसखरे तेरे कांधे पर तो एक गधे का बोझ है, मसखरे ने उत्तर दिया नहीं महाराज दो गधों का।

(2) एक बाघ और एक मनुष्य ने अपने चित्र को साथ बने हुये एक घर में देखे, मनुष्य ने बाघ से कहा "देखो! मनुष्य ने बाघ को कैसे अपने वश में कर रखा है? बाघ ने उत्तर दिया ऐ मनुष्य इस का चित्रकार मनुष्य है यदि बाघ चित्रकार होता तो यह दृष्य न दिखता।

(3) एक व्यक्ति का शासन की ओर से पद ऊँचा किया गया, उस का एक पुराना मित्र उस को बधाई देने आया परन्तु उस उन्नति पाये हुए मित्र ने अपने पुराने मित्र को न पहचाना और पूछा तुम कौन हो? पुराना मित्र लज्जित हुआ और उत्तर दिया "मुझे नहीं पहचाना मैं तेरा पुराना फुलां मित्र हूं मैं ने सुना कि तु अंधा हो गया है, इस लिए शोक प्रकाशन को आया हूं।

(4) एक हकीम (चिकित्सक) जब कब्रिस्तान जाता तो अपना मुखड़ा और आँखें चादर से छुपा लेता, किसी ने इस का कारण पूछा तो उत्तर दिया कि मैं इस कब्रिस्तान के मुर्दों से लज्जित हूं इस लिए कि यह सब मेरी ही दवा से मरे हैं।

(5) एक भिखारी एक कंजूस के पास गया और कुछ मांगा, कंजूस ने कहा यदि तू मेरी एक बात मान ले तो फिर तू जो कहे वह दूंगा, भिखारी ने कहा, कहिये वह कौन सी बात है कंजूस ने कहा तू मुझ से कभी कोई चीज़ न मांगें उस के अतिरिक्त जो कहे वह दूंगा।

(6) एक कवि एक धनवान के पास गया और उस की प्रशन्सा में एक कविता कह कर सुनाई परन्तु धनवान ने उसे कुछ न दिया, तो कवि ने उसकी निन्दा में एक कविता कह कर पढ़ दी, धनवान ने कुछ न कहा, कवि अपने घर चला

गया और दूसरे दिन फिर धनवान के पास आ बैठा, धनवान ने कहा, हे कवि! तू ने मेरी प्रशंसा की मैं ने तुझ को कुछ न दिया फिर तू ने मेरी निन्दा की, तो मैंने तुझ को कुछ न कहा, अब तू क्या चाहता है, कवि ने उत्तर दिया! मैं चाहता हूं कि तू मरे तो तेरी शोक गाथा भी लिख दूं।

(7) एक शरीर शख़्स ने एक फ़क़ीर की पगड़ी छीनी और पगड़ी ले कर भाग गया, फ़क़ीर कब्रितान के द्वार पर जा कर बैठ गया एक शख़्स ने उस से कहा कि वह आदमी तो तेरी पगड़ी ले कर उस बाग की तरफ भाग गया है, तू यहां कब्रिस्तान के दरवाजे पर क्यों बैठा है? फ़क़ीर ने कहा कि आखिर वह भी तो एक दिन यहां आएगा इसी लिए यहां बैठा हूँ।

(8) एक व्यक्ति ने स्वप्न में शैतान को देखा वह लम्बी दाढ़ी रखे हुए था, उस व्यक्ति ने शैतान की दाढ़ी पकड़ी और उस के मुंह पर जोर से तमांचा मार कर कहा खबीस! तू हम इन्सानों को बहकाता है और धोखा देने के लिए लम्बी दाढ़ी रख रखी है यह कहते हुए और उस की दाढ़ी पकड़े हुए दूसरा तमांचा जियादा ज़ोर से मारा अब उसकी आंख खुल गई उस ने अपनी दाढ़ी आपने हाथ में देखी और दूसरा हाथ गाल पर यह देख कर वह बहुत लज्जित हुआ।

(9) एक व्यक्ति ने एक कंजूस से मित्रता की एक दिन उस ने कंजूस से कहा कि मैं बाहर यात्रा पर जाने वाला हूं आप अपनी अंगूठी मुझ को दे दीजिए, जब अंगूठी देखूंगा आप को याद करूंगा। कंजूस ने कहा जब आप अपनी उंगली खाली देखियेगा तो मुझे याद कीजियेगा, कि मैंने अपने मित्र से अंगूठी मांगी थी उस ने नहीं दी।

(10) एक राजा ने स्वप्न में देखा कि उस के सारे दांत गिर गये हैं, उस ने एक ज्योतिषी को बुलाया और अपना स्वप्न बयान कर के स्वप्न फल पूछा, ज्योतिषी ने उत्तर दिया कि महाराज! इस का मतलब यह है कि आप की सारी सन्तान आप के जीवन ही में मृत्यु प्राप्त करेगी, राजा यह स्वप्न फल सुन कर क्रोधित हुआ और ज्योतिषी को कैद कर के दूसरे ज्योतिषी को बुलाया और उस से स्वप्न फल पूछा, उसने कहा महा राज आपकी आयु आप की सारी सन्तान से लम्बी है, राजा इस उत्तर से प्रसन्न हुआ और ज्योजिषी को पुरस्कार दिया।

(11) एक अनपढ़ व्यक्ति एक लेखक के पास गया और उस से अनुरोध किया कि मेरी ओर से एक चिट्ठी लिख दीजिए, लेखक ने कहा मेरे पैरों में दर्द रहता है, व्यक्ति ने कहा मैं आप को कहीं भेजना नहीं चाहता हूं, चिट्ठी लिखने को कह रहा हूं, लेखक ने कहा आप ठीक कहते हैं, परन्तु मैं जब किसी के लिए चिट्ठी लिखता हूं तो उस के पढ़ने के लिए भी बुलाया जाता हूं इस लिए कि मेरा लिखा कोई पढ़ नहीं पाता।

❖❖❖

अचार-हल्वा

—इदारा

शलजम का अचार:

शलजम की कत्लियां (फांकें) पांच कि0ग्राम, ले कर पानी में हल्का सा उबालें, फिर उसे साये में कुछ खुश्क करें यानी सुखाएं परन्तु नमी रहे, फिर उस में निम्न लिखित चीज़ें मिलाएं—

पिसा नमक 120 ग्राम, लाल मिर्च 60 ग्राम, राई 120 ग्राम। राई और मिर्च बारीक पीस कर नमक में मिला लें, मिर्च पिसी हुई लें तो अच्छी कम्पनी की हो, 120 ग्राम लहसुन के जवे छिले हुए, बारीक कतर लें, 250 ग्राम अदरक धुली और साफ की हुई बारीक कतर लें। ये सब चीज़ें शलजम के क़त्लों में अच्छी तरह मिला दें और एक दो रोज़ इसी तरह रहने दें फिर जब क़त्लों में चखने से खटास मालूम होने लगे तो उस पर 500 ग्राम शकर का गाढ़ा क़िवाम (जलाव) डाल दें। बस स्वादिष्ट अचार तैयार हो गया।

यह अचार जहां खाने को मज़ेदार बनाता है वहीं खाने को पचाता भी है और भूख भी लगाता है, कम बनाना हो तो हर चीज़ आधी या चौथाई कर लें।

अण्डे का पौष्टिक हल्वा:

सामग्री- मुर्गी के अण्डे एक दर्जन, देसी घी या डाल्डा 250 ग्राम, बादाम 100 ग्राम, पिस्ता 100 ग्राम, चिरौंजी 100 ग्राम, गरी पाउडर 100 ग्राम, शहद अस्ली 350 ग्राम लौंग 5 ग्राम।

बनाने की विधि- सब मेवे बारीक पीस लें, अण्डे उबाल कर उसकी ज़र्दी अलग कर लें फिर उस ज़र्दी को चुटकी से मल कर आटे की तरह कर लें, घी को कड़ाही में डालें और गर्म करें, जब तेज़ गर्म हो जाए तो लौंग उस में डाल दें, जब लौंग तल जाये तो जल्दी से छन्ने से अलग कर के ज़र्दी उस में डाल कर कुछ भूनें इतनी कि खुशबू आने लगे, ज़ियादा न भूनें, फिर उसमें सब मेवे और शहद डाल कर घोटते हुए थोड़ा पकाएं अब कड़ाही चूल्हे पर से उतार लें और तली हुई लौंगें पीस कर अच्छी तरह मिला दें, चाहें तो बीस अदद चांदी के वरक़ भी घोंट दें, हलका सा केवड़ा जल डाल दें हलवा तैयार है। ये हलवा सुब्ह को नाशते से पहले 60 ग्राम खा कर दूध की चाय पियें फिर कुछ देर के बाद नाशता करें। मोटापे के रोगी तथा मधुमेह के रोगी इसे न खायें, गर्भवती स्त्रियां भी ये हल्वा न खायें।

पौष्टिक तथा स्वादिष्ट हल्वा:

सामग्री- चने की दाल 500 ग्राम, काजू 100 ग्राम, बादाम 100 ग्राम, चिरौंजी 100 ग्राम, गरी पाउडर 50 ग्राम, इलाइची 5 ग्राम, शकर 800 ग्राम, दूध 1 लीटर।

बनाने की विधि- सब मेवे बारीक पीस लें, दाल शाम को पानी में भिगो दें सुब्ह को उबाल कर पानी जला दें फिर दाल को सिल पर पीस लें, दूध में शकर की कड़ी चाशनी तैयार करें पिसी दाल को थोड़ी थोड़ी कर के घी में इलाइची का बघार दे दे कर भूनें फिर बाक़ी घी में इलाइची का बघार दे कर पूरी दाल और सारे मेवे डाल कर ज़रा घोटें, फिर दूध शकर की गर्म चाशनी डाल कर अच्छी तरह घोट दें और चूल्हे से उतार लें, सम्भव हो तो बीस अदद चांदी के वरक़ भी मिला दें और हल्का केवड़ा जल खुशबू के लिए डाल दें, ये हल्वा सुब्ह को नाशते से पहले 60 ग्राम खा कर दूध की चाय पियें फिर कुछ देर के बाद नाशता करें। सूगर के रोगी और मोटापे के रोगी ये हल्वा न

खायें, ये हल्वा स्वाद के लिए जब चाहें मिठाई की तरह खा सकते हैं।

गाजर का सस्ता और पौष्टिक हल्वा:

गाजर वही जो आम तौर से ठेलों पर पीले रंग की बिकती है। एक किलो गाजर जो बहुत मोटी न हो साफ धो कर छोटे छोटे टुकड़े काट लें फिर उसे साफ पानी मे उबालें और पानी जला दें अब 50 ग्राम देसी घी या डालडा में छोटी इलाइची का बघार दे कर गाजर उस में डाल दें और 250 ग्राम शकर भी डालें और घोट कर पकाऐं यहां तक कि शकर गाजर में मिल जाये, हल्वा तैयार हो गया।

आप चाहें तो 250 ग्राम खोया घी में भून कर उसे भी मिला दें मगर खोया मिलाएं तो 100 ग्राम शकर और बढ़ा दें।

अगर गाजर देशी हो जो कत्थई रंग की होती है तो उस को ठीक से साफ कर के उबालें अगर वह भी मोटी हो तो डेढ़ किलो उबाल कर उस की भी बीच की हड्डी अलग करें, अगर हड्डी न निकाल सकें तो कोई हरज न होगा। कत्थई गाजार, पीली गाजर से अधिक लाभदायक होती है। ◆◇◆

हज़रत मौ0 मुफ़्ती...............

मुफ्ती साहब की कृपा मुझ पर इतनी थी और मुझे वह इतना चाहते थे कि अपना ऑफिस छोड़ कर मेरे ऑफिस में आ कर मेरे पास बैठते और यहीं अपना ज़रूरी काम करते मैंने अपनी कुर्सी के बग़ल एक तख़्त डाल रखा है उस पर गद्दा बिछा दिया है मुफ़्ती साहब कभी कुर्सी पर बैठे रहते तो कभी तख़्त पर लेट कर आराम करते।

मुफ़्ती साहब फतवा देने में बहुत ही निपुण थे जो कोई लिख कर फतवा मांगता तो लिख कर जवाब देते ज़बानी पूछता तो ज़बानी जवाब देते यहाँ तक कि रास्ता चलते लोग रोक कर मुफ़्ती साहब से फतवा पूछते तो मुफ़्ती साहब को ना गवारी न होती, तुरन्त जवाब देते, सच्चा राही के सवाल व जवाब मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी के नाम से लिखे जाते हैं परन्तु बाज सवालों के जवाब मुफ़्ती साहब के होते थे। हज़रत मुफ़्ती साहब बड़े भले और सरल स्वभाव के थे मेरे पास बैठते या तख़्त पर लेटे होते तो धीमी आवाज में अल्लाह का ज़िक्र करते रहते और कसरत से इस्तिगफ़ार पढ़ते, मुफ़्ती साहब के विषय में अधिक जानकारी के लिए उर्दू अर्ध मासिक पत्रिका तअ़मीरे ह़यात पढ़ें जिसमें उनके शागिर्दों और बराबर वालों के अच्छे लेख छपेंगे मैं यहां इतने ही पर बस करता हूं। मुफ़्ती साहब ने अपने पीछे तीन आ़लिम बेटे, बेटियां कई पोते और कई नवासे छोड़े अपने पाठकों से अनुरोध है कि मुफ़्ती साहब के लिए मग़फिरत की दुआ कर के और संभव हो तो कुछ कुर्आन पढ़ के या दूसरी नेकियां कर के सवाब बख़्शें और खुद सवाब पायें। अल्लाह तआला मुफ़्ती साहिब की मग़फ़िरत फरमा कर दरजात बुलन्द करे। मुफ़्ती साहब की जनाज़े की नमाज़ अस्र बाद नदवे की फील्ड में हुई, नदवतुल उलमा के नाज़िम हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामज़िल्लहु ने नमाज़ पढ़ाई नमाज़ियों से पूरी फील्ड भरी हुई थी अंदाज़ा है 10 हजार नमाज़ी रहे होंगे। फिर डालीगंज के कब्रस्तान में तदफीन हुई। ◆◇◆

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

गेसूए ताबदार को और भी ताबदार कर
گیسوئے تابدار کو اور بھی تابدار کر
होशो ख़िरद शिकार कर क़ल्बो नज़र शिकार कर
ہوش و خرد شکار کر قلب و نظر شکار کر
हुस्न भी हो हिजाब में और इश्क़ भी हो हिजाब में
حسن بھی ہو حجاب میں اور عشق بھی ہو حجاب میں
या तो ख़ुद आशकार हो या मुझे आशकार कर
یا تو خود آشکار ہو یا مجھے آشکار کر
तू है मुहीते बे करां मैं हूं ज़रा सी आबेजू
تو ہے محیط بے کراں میں ہوں ذرا سی آب جو
या मुझे हमकनार कर या मुझे बे किनार कर
یا مجھے ہم کنار کر یا مجھے بے کنار کر
मैं हूं सदफ़ तो तेरे हाथ मेरे गुहर की आबरू
میں ہوں صدف تو تیرے ہاتھ میرے گہر کی آبرو
मैं हूं खज़फ़ तो तू मुझे गौहरे शाहवार कर
میں ہوں خزف تو تو مجھے گوہرے شاہوار کر
बागे़ बिहिश्त से मुझे हुक्मे सफर दिया था क्यों
باغ بہشت سے مجھے حکم سفر دیا تھا کیوں
उक्बा मेरा संवार तू दुन्या भी ख़ुशगवार कर
عقبیٰ میرا سنوار تو دنیا بھی خوش گوار کر